द्वितीय अध्याय

मृणाल पाण्डे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-

(1) जन्म एवं बाल्यकाल

(2) पारिवारिक जीवन

(3) कार्यक्षेत्र

(4) रचनाओं का परिचय

(5) पुरस्कार तथा सम्मान

(6) भारत में स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पाण्डे का योगदान

किसी भी साहित्यकार के साहित्य पर चर्चा करने या व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने से पहले उसके बारे में जानना जरूरी होता है। उसकी परंपरा और संस्कृति को समझना महत्वपूर्ण होता है। जब कोई साहित्यकार अपनी कृति में कुछ भी उद्घाटित करता है उसमें उसके जीवन काल की अनेक घटनाओं का जिक्र मिलता है। उसके व्यवहार एवं व्यक्तिगत विशेषताओं की छाप भी दिखाई देती है। उसके साहित्य में जीवन व्यक्तित्व एवं उसके द्वारा वर्णित सिद्धांतों की बातें मिलती हैं इसलिए साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए उसके व्यक्तित्व एवं पारिवारिक जीवन को जानना आवश्यक हो जाता है। मृणाल पांडे के संपूर्ण साहित्य को एवं उसमें स्त्री-विमर्श की सुगबुगाहट की पहचान करने के लिए उनके बहुआयामी व्यक्तित्व एवं प्रतिभा को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है।

हिंदी साहित्य की वरिष्ठ कथाकार, साहित्यकार, पत्रकार एवं लेखिका मृणाल पाण्डे नारी विमर्श पर सदैव से लिखती रही हैं। सबके आंकड़ों से उनके आंकड़े थोड़ा अलग होते हैं। भली-भांति जाना समझा हुआ उनका लेखन कई बार साहित्यकारों एवं मनोवैज्ञानिकों को चौकाता भी है। नारी विमर्श पर बयान देने वाले साहित्य के जानकारों को अच्छी सीख भी देता है। अपने गहरे तेवर के कारण कई बार उनके बयान विमर्श के मुद्दे बन जाते हैं। अन्य की तरह पढ़ी गई बातें मृणाल पाण्डे नहीं कहती कबीर की तरह आंखिन देखी और घटित दास्तानों का सिलसिला प्रस्तुत करती हैं।

भ्रमण के दौरान यात्रा पर और कभी किसी आंदोलन में देखी गई, समझी गई बातों पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करती हैं।

(1) जन्म एवं बाल्यकाल-

विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में 21वीं सदी की क्रांतिकारी लेखिका मृणाल पाण्डे को साहित्य के तर्ज पर कहना पूर्णतः सार्थक है। लेखिका मृणाल पाण्डे का जन्म 26 फरवरी सन 1946 ई. को टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश) में हुआ था। उनका पैतृक निवास कसून (अल्मोड़ा) है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा नैनीताल में हुई। उसके बाद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. किया। उन्होंने अंग्रेजी एवं संस्कृत साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्व, शास्त्रीय संगीत तथा ललित कला की शिक्षा कारकारन विश्वविद्यालय (वाशिंगटन डीसी.) से पूर्ण की। मूर्तिकला, डिजाइनिंग की शिक्षा भी पूर्ण की। 21 वर्ष की उम्र में इनकी पहली कहानी हिंदी साप्ताहिक धर्मयुग (1967) में छपी। प्रयाग भोपाल, दिल्ली में अध्यापन कार्य भी किया। अध्यापन के बाद पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उतरी। टाइम्स ऑफ इंडिया के प्रकाशन समूह की पत्रिका 'वामा' (1984) का भी संपादन किया। भारत का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला अखबार दैनिक हिंदुस्तान पत्र के संपादक मंडल का भी कार्यभार संभाला। मृणाल पाण्डे लगातार लेखन कार्य कर रहीं हैं। समाज सेवा में उनकी गहरी रुचि रही है। ये कुछ वर्षों तक सेल्फ एंप्लॉयड वुमन कम्युनिकेशन की सदस्य भी रही हैं। अप्रैल 2008 में

उन्हें पीटीआई बोर्ड की सदस्य भी बनाया गया। हिंदी साहित्य की प्रख्यात लेखिका मृणाल पाण्डे को केंद्र सरकार ने प्रसार भारती का अध्यक्ष भी नियुक्त किया था। यह 2010 से 2014 तक प्रसार भारती की अध्यक्ष बनी रही। प्रसार भारती के अंतर्गत आकाशवाणी व दूरदर्शन का संचालन भी किया जाता है। मृणाल पाण्डे लोकसभा चैनल के साप्ताहिक साक्षात्कार का कार्यक्रम 'बातों बातों में' का संचालन भी करती रही हैं। मृणाल पाण्डे अंग्रेजी में भी लेखन कार्य करती हैं और आज भी लिख रही हैं। इंडियन थियेटर टुडे इनकी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण कृति भी है। मृणाल पाण्डे ने स्टार टीवी और दूरदर्शन के लिए भी काम किया है। उन्होंने देवी की देवी (2000), बेटी की बेटी (1993) जो कि राम हाथ ठहराया (1993) विषय नारी (1991) अपना खुद का गवाह (2001) आदि चर्चित किताबें भी लिखी हैं। मृणाल पांडे के बारे में 'वेबदुनिया समाचार' में छपी एक रिपोर्ट से यह साबित होता है कि महिला लेखन में उनका नाम सर्वाधिक क्यों चर्चित है। उसमें यह उल्लेख मिलता है कि-"वह पत्रकार हैं, लेखिका हैं, कहानीकार हैं, संपादक हैं, निबंधकार हैं। पिछले 47 सालों से वे पत्रकारिता कर रही हैं। जब वह लिखती हैं तो लगता है जैसे शब्दों को उनके मायने मिल गए हैं। जब 21 साल की थी तो सप्ताहिक धर्मयुग में उनकी पहली कहानी छपी थी तब से शुरू हुआ यह सफर आज भी अनवरत जारी है।"[1]

(2) पारिवारिक जीवनः-

मृणाल पाण्डे के पारिवारिक जीवन का उल्लेख इस प्रकार है- मृणाल पाण्डे की माता का नाम शिवानी था जो हिंदी की प्रख्यात लेखिका एवं उपन्यासकार हैं। शिवानी का उपनाम गौरापंत था। शिवानी का जन्म अक्टूबर 1923 ई. को विजयदशमी के दिन राजकोट (गुजरात) में हुआ था। इनकी मृत्यु 21 मार्च 2003 में 79 वर्ष की उम्र में हुई। शिवानी को 1982 में हिंदी साहित्य में पद्मश्री पुरस्कार भी मिला। शिवानी ने धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान में लेखिका के रूप में काम किया। उनकी शिक्षा शांतिनिकेतन में हुई थी। शांतिनिकेतन में उनकी शिक्षा सातवीं कक्षा से प्रारंभ हुई। सन 1943 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बीए की परीक्षा विशेष सम्मान के साथ उत्तीर्ण की। यह लगभग 9 वर्ष तक शांति निकेतन में रहीं।

शांतिनिकेतन में शिवानी ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से हिंदी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा ग्रहण की। शिवानी द्विवेदी जी की मुख्य शिष्या रही। प्रसिद्ध सिनेमा जगत के कलाकार बलराज साहनी की भी छात्रा रही। शिवानी ने रविंद्र और हिंदुस्तानी संगीत की शिक्षा भी ग्रहण की। लेखिका मृणाल पांडे के नाना श्री अश्विनी कुमार पाण्डे जी राजकोट (सौराष्ट्र) के राजकुमार कॉलेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर थे। इनका प्रारंभिक नाम अंबादत्त पाण्डे था। मृणाल पाण्डे के नानाजी जूनागढ़, मैसूर रामपुर, दतिया, जसदण,

ओरछा आदि राजघरानों के राजकुमारों के शिक्षा गुरु भी थे। इनका परिवार लगभग 14 वर्षों तक राजकोट में निवास किया। मृणाल पाण्डे की नानी का नाम लीलावती पाण्डे था। उनका मायका लखनऊ में था। वह गुजराती की प्रख्यात लेखिका एवं विदुषी भी थी। उनका अपने ही घर पर हिंदी, गुजराती, संस्कृत का एक पुस्तकालय भी उपलब्ध था। उनकी नानी को गुजराती, बंगाली साहित्य में विशेष रूचि थी। उनके नानी के बारे में यह भी बात प्रसिद्ध है कि वह एक सफल आलोचक भी थी। नारी शिक्षा एवं अस्मिता के पक्ष में वे सदैव लिखती रहीं।

मृणाल पाण्डे के पिता का नाम सुखदेव पंत था। वह एक कुशल शिक्षक भी थे तथा उत्तर प्रदेश एजुकेशन विभाग में इलाहाबाद में कार्यरत थे। मृणाल पांडे का एक भाई है और तीन बहने हैं।भाई का नाम मुकेश पंत है, ये कुछ समय विदेश में कार्य करते रहे। मृणाल पाण्डे की कुल तीन बहनों में मृणाल पांडे, ईरा पांडे और वीणा जोशी हैं। वीणा पांडे पहले हवाई सेवा में थी अब वह गायिका हैं। मृणाल पांडे के पति का नाम अरविंद पांडे है। वह स्टील अथॉरिटी आफ इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन थे। अब वह रिटायर्ड हैं। मृणाल पांडे की दो लड़कियां हैं अब वे दोनों विदेश में रहती हैं।

मृणाल पांडे का स्वभाव शांत एवं सरल है पर कभी-कभी नारी विमर्श पर लेखन में या चर्चा में महादेवी वर्मा की तरह उग्र हो जाती हैं। नारी शिक्षा एवं नारी उत्थान के समर्थन में वे सदैव से लिखती रही हैं। जब कोई भी मृणाल पांडे से यह प्रश्न करता है कि तुम क्यों लिखती हो? तो वे उग्र

हो जाती थी। यही कारण है कि वह थोड़ा क्रोधित स्वभाव की है। स्त्री पर जब-जब अत्याचार हुआ या शोषण हुआ है तब तब उन्होंने स्त्री की अस्मिता को झुकने नहीं दिया है। उनके साहित्य में मीरा, महादेवी, कबीर, मुक्तिबोध की तरह आक्रोश मिलता है। जब-जब स्त्री के साथ अन्याय हुआ है तब-तक मृणाल पांडे चुप रहने वाली नहीं है। वे कई वर्षों से नारी अस्मिता के पक्ष में लिखती रही हैं। मृणाल पांडे का यह मानना था कि हमेशा से स्त्री का पहला संकट स्वयं की अस्मिता का तथा सही सलामत रहने का संकट रहा है। यह संकट सीता, द्रौपदी, गार्गी, गांधारी, अहिल्या का रहा हो या आधुनिक स्त्री का। 'यानी कि एक बात थी' कहानी संग्रह की प्रस्तावना में मृणाल पांडे जी कहती हैं कि- "तुम क्यों लिखती हो? यह सवाल मुझे तनिक विस्मय में डाल देता है क्योंकि उनके भीतर मानव स्वभाव और लेखन प्रक्रिया दोनों के प्रति एक किस्म का ज्ञान छिपा है। लेखन समेत सारी कलाएं अभिव्यक्ति से जुड़ी हैं। वह अभिव्यक्त की इच्छा ही है। गद्य अथवा पद्य पर रचना अपने आप में अपने लेखन द्वारा अंतिम रूप दे दिए जाने के बाद एक ऐसी संपूर्ण इकाई बन जाती है जिसकी व्याख्या उसी **दायरे में हो सकती है।"**[2]

(3) कार्यक्षेत्र-

मृणाल पांडे मुख्यतः लेखिका हैं। इसके अलावा उन्होंने कई क्षेत्रों में कार्य किया है जो इस प्रकार है-

(क) साहित्य:- मृणाल पांडे आज भी साहित्य लेखन का कार्य कर रही हैं। साहित्य का यह सफर नारी विमर्श के मुद्दों को लेकर चलता रहा है। उन्होंने कई उपन्यासों की रचना की जैसे- पट रंगपुर पुराण, विरुद्ध, हमको दियो परदेश, अपनी गवाही, देवी आदि। इसके अलावा बचुली चौकदारिन की कढ़ी, यानी कि एक बात थी, चार दिन की जवानी तेरी जैसी कहानी संग्रह भी लिखा है। मृणाल पांडे ने समस्त जनमानस की आकांक्षाओं एवं वृत्तियों को लेकर नाटक के क्षेत्र में भी काम किया। उनके नाटक नाट्य विधा में महत्वपूर्ण स्थान हासिल करते हैं। 'जो राम रचि राखा', 'चोर निकल कर भागा', आदमी जो मछुआरा नही था, और काजल की कोठरी जैसे महत्वपूर्ण नाटक भी लिखा है। इसके अलावा नारी मुद्दों को लेकर आलोचनात्मक निबंधों की रचना उन्होंने की जैसे- 'परिधि पर स्त्री', 'जहां औरतें गढ़ी जाती हैं', 'स्त्री देश की राजनीति से देश की राजनीति तक, ध्वनियों के आलोक में स्त्री, ओ उब्बीरी आदि।

(ख) पत्रकारिता-

साहित्यकार के साथ-साथ मृणाल पांडे एक बड़ी पत्रकार भी हैं। पत्रकारिता जगत में हो रहे शोषण एवं स्त्री के साथ हो रहे बर्ताव को उन्होंने अपने साहित्य में अच्छे तरीके से दिखाया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में कौन-कौन सी समस्याएं आती हैं? तथा एक पत्रकार समाज कि किस प्रकार से सेवा करता है? यह सब मृणाल पांडे ने अपने साहित्य में दिखाया है? भारत

का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला अखबार 'दैनिक हिंदुस्तान' का संपादन भी कर चुकी हैं तथा वामा पत्रिका व साप्ताहिक हिंदुस्तान का भी संपादन किया है। पत्रकारिता जगत की कठिनाइयों एवं बारीकियों को उन्होंने अपने एक उपन्यास 'अपनी गवाही' में व्यक्त किया है। स्त्री पत्रकारिता और सामान्य पत्रकारिता में क्या अंतर होता है इस उपन्यास को पढ़ने के बाद स्पष्ट हो जाता है। इसके अलावा कादंबिनी तथा नंदन पत्रिकाओं का भी संपादन मृणाल पांडे ने किया है।

इतना ही नहीं उन्होंने मूर्तिकला तथा डिजाइनिंग आदि के क्षेत्रों में भी कार्य किया है। टेलीविजन चैनल, एनडीटीवी का भी इन्होंने संचालन किया है। कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, अनुवाद पत्रकारिता, टेलीविजन लेखन पर निरंतर कार्य कर रही हैं। उनका कार्यक्षेत्र विस्तृत होने के कारण इनके साहित्य का दायरा भी लंबा होता जा रहा है।

(ग) संगीत :

मृणाल पांडे ने संगीत के क्षेत्र में भी शिक्षा ग्रहण की। संगीत के क्षेत्र में संगीत विशारद की डिग्री हासिल की। साहित्य के साथ-साथ संगीत के क्षेत्र में इनकी बहुत रूचि है। संगीत को इन्होंने साहित्य में रचने का प्रयास किया। इनकी दो महत्वपूर्ण पुस्तक 'ध्वनियों के आलोक में ही स्त्री' जो नारी जीवन की संगीत विशेष की रूपरेखा प्रस्तुत करती है। स्त्रियों ने संगीत के क्षेत्र में कैसे उपलब्धि हासिल की? इन सबका जिक्र इस पुस्तक में मिलता है तथा दूसरी पुस्तक 'सहेला रे' उपन्यास है जिसमें संगीत की

परंपरा में स्त्री के योगदान को स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। गौहर जान से लेकर रेशमा तक की परंपरा को स्त्री की संगीत चेतना के माध्यम से उतारने का प्रयास इन कृतियों में है।

(घ) कविता :

मृणाल पांडे ने कई कविताएं लिखी उनकी कविताएं स्त्री चेतना को व्यक्त करती हैं तथा नारी जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करतीं हैं। उनकी एक कविता इस प्रकार है-

हरी 'व्यथित' औ नरी 'अकेला' कभू कभू,
लव खोलै थे,
जब जब धीयां पास गुजरतां, 'मर गए जानी'
बोलै थे ।।
हरित 'सशंक औ' मोहन हुड़किया सबकी
अपनी थी औकात,
अपने-अपने छंद छत्तरपति बन बन होली खेलैं
थे ।।
फितरत उनकी 'पंत', 'निराला', किस्मत उनकी
क्लर्काई ,
खुदै लिखै औ खुदै छपाएँ,
खुदै उसी पर बोलै
थे ।।
घर की बहुआं कभी-कभी जब बैठक कमरा
झाड़ै थी,
मार झपाका गड्डी-गड्डी कविता-फ़विता फाडैं
थी ।।

मृणाल पाण्डे साहित्य के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। वे वूमन्स संस्था में बहुत दिनों तक कार्य कर चुकी हैं। कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य करने के बाद प्रसार भारती की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। अपनी प्रतिभा लगन से आज भी लगातार लेखन, पत्रकारिता तथा समाज सेवा में कार्य कर रही हैं। विशेषकर स्त्री लेखन पर उनका कार्य स्त्री-विमर्श को नई दिशा दे रहा है जो चर्चा का विषय बना हुआ है।

(4) रचनाओं का परिचय-

मृणाल पांडे के साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। अपने विचारों को साहित्य में पिरोने का कार्य मृणाल पांडे ने बड़ी बारीकी से किया है। नारी जीवन की अकुलाहट एवं संवेदना को क्रमवार प्रस्तुत किया है। लेखन या साहित्य की कोई भी विधा उनसे अछूता नहीं है। उनके रचनाओं का परिचय इस प्रकार है-

उपन्यास-

(क) विरूद्ध (उपन्यास)- मृणाल पाण्डे जी का यह उपन्यास चरित्र प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में इन्होंने नायिका रजनी के मानसिक द्वन्द को दिखाया है। यह उपन्यास एक सामान्य स्त्री के वैवाहिक जीवन की स्थिति एवं उसके समस्त क्रियाकलापों को रेखांकित करता है। वस्तुतः कथात्मक दृष्टि से उपन्यास वर्णनात्मक ही है। उपन्यास का प्रारंभ नायिका रजनी के जीवन की गतिविधियों से शुरू होता है। उदय के साथ रजनी का

विवाह होता है, विवाह के कुछ वर्ष तो अच्छे से भी डरते हैं परंतु नायिका रजनी के अंदर एक प्रकार का जीवन संघर्ष चलता रहता है। वह उसी उहापोह में डूबी रहती है। उदय भी उसके बारे में पता नहीं कर पाता है। उसके मस्तिष्क में क्या-क्या चल रहा है-" तुम हर एक काम ऐसे झटके के साथ क्यों करती हो। ए? रात को तो फूट कर खड़ी हो जाती हो, कुर्सी पर बैठोगी तो खटाक से उठोगी तो, हर वक्त तुम इतनी तन्हाई में क्यों रहती हो।"[3]

लड़कियों को समाज में अक्सर पराई या बोझ समझा जाता है। रजनी के बुआ को लड़के-लड़कियों को साथ-साथ रहना पसंद नहीं था। लेखिका ने रजनी के फूफा का ज्यादा चित्रण तो नहीं किया लेकिन फिर भी वह स्वभाव के उत्तम और रजनी के प्रति नरम थे। वे अपने बेटे दिनेश की नौकरी की बात उदय से करते रहते थे कि उदय चाहेगा तो दिनेश की नौकरी कहीं लग जाएगी। अगर देखा जाए तो यहां मृणाल जी ने उपकथा के माध्यम से हमारे समाज में मध्य वर्ग के लोगों की परेशानियों तथा उनके परिवार में लड़कियों के बर्ताव तथा लड़कों के प्रति अधिक चिंता को लेखिका ने रजनी के बुआ के सहारे दिखाने का प्रयास किया है। दूसरी ओर लेखिका ने रजनी के माध्यम से स्त्री मुक्ति, स्त्री स्वतंत्रता तथा स्त्रीस्वतंत्रता तथा स्त्रीहीनता के विषय में आक्रोश को दिखाया है। स्त्री कब तक आजाद रह सकती है? यहां तक कि विवाह के बाद उसकी सारी आजादी निश्चित हो जाती है। वह पूर्णतः दूसरे के अनुसार कार्य करने पर बाध्य हो जाती है।

मुख्यतः लेखिका ने इसी ओर ध्यान आकर्षित किया है। रजनी भी सोचती है कि मैं कुछ नहीं कर पाऊंगी। एक तरह से कहा जाए तो वह अपने अस्तित्व की तलाश में लगी रहती है। जीवन जीने का नया माध्यम ढूंढती रहती है। बाधा मुक्त जीवन को जीना चाहती है।

यह उपन्यास चरित्र के धरातल पर टिका जरूर है। पर मुख्यतः कहां जाए तो इस उपन्यास में एक ब्याहता स्त्री की विडंबना युक्त जीवन का अवलोकन मिलता है। उपन्यास में कुल 10-12 पात्र हैं। इस उपन्यास में रजनी और उदय ही मुख्य पात्र हैं। रजनी नायिका और उदय नायक है। रजनी जिद्दी एवं मनमानी करने वाली स्त्री है जबकि उदय सरल एवं उदार है। उपन्यास में यदि गौड़ पात्रों की चर्चा की जाए तो इनकी भूमिका नाम मात्र की है तथा इनकी कथा भी सीमित दायरे में है। बिल्लो, सोमेंद्र, नरेश, बुआ, शांता, शीला, फूफा, गोपाल सिंह जैसे चरित्र गौड़ पात्र हैं। इन गौड़ पात्रों पर लेखिका ने लिखने का ज्यादा रुझान नहीं दिखाया है अर्थात केवल कथा को आगे बढ़ाने के लिए इनका सहारा लिया है पूरी कथा का केंद्र बिंदु रजनी और उदय ही हैं।

कथा देशकाल और वातावरण के अनुरूप ही है। कथा के आंतरिक एवं वाह्य पक्ष दोनों को लेखिका ने संदर्भ के साथ दिखाया है। उपन्यास की कथा का घटनास्थल शहरी और पहाड़ी क्षेत्र दोनों है। गर्मी का मौसम है नायिका अपने पति के साथ पहाड़ी क्षेत्र का आनंद लेने जाती है। यहीं से उपन्यास का कथानक बुना जाता है। संवाद योजना बड़ी ही संक्षिप्त और

सारगर्भित है। संक्षिप्तता के कारण कहीं-कहीं नाटकियता नजर आती है। एक आम बातचीत के माध्यम से संवाद योजना को आगे बढ़ाने का कार्य लेखिका ने किया है।

उपन्यास की भाषा सरल एवं व्यंग्यपूर्ण है। एक स्त्री साहित्यकार और आम साहित्यकार में जो फर्क होता है वह इस उपन्यास में दिखाया गया है। भाषा में कड़वाहट कथा में व्यक्त संवेदना को लेकर है। प्रसंगों के अनुसार भाषा भी बदलती जाती है। व्यंग्य के रूप में कहीं-कहीं देशज, अंग्रेजी एवं विदेशी शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। शिल्प की दृष्टि से यह कलात्मक उपन्यास है। लेखिका ने इसमें विविध प्रसंगों को लेकर व्यंग किया है। कला पक्ष उपन्यास के हर प्रसंग को साफ तौर पर प्रस्तुत करता है।

(ख) पटरंगपुरपुराण (उपन्यास):- मृणाल पांडे का यह उपन्यास मिथक पर आधारित है। इसमें लेखिका ने इतिहास पुराण को सामाजिक कड़वाहटों के साथ चित्रित किया है। ऐतिहासिक आधार को लेकर सामाजिक, आंचलिक तथा संस्कृतिक मूल्यांकन किया गया है। इस उपन्यास को आंचलिक श्रेणी में रखा जा सकता है। इसमें मृणाल जी ने पीढ़ी दर पीढ़ी ब्यौरा प्रस्तुत किया है। पीढ़ियों के साथ बदलती संस्कृति, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थितियों को बड़ी कलात्मकता के साथ दिखाया है। उपन्यास की कथा कुल छः पर्व में लिखी गई है। आदि पर्व में त्रेता युग में राम और रावण के युद्ध की कथा है। उपन्यास का प्रारंभ आमा के प्रसंगों एवं सुनी

सुनाई बातों के आधार पर शुरू होता है। आमा ही बताती हैं कि इस जमाने में क्या-क्या हुआ? कथानक की शुरुआत लक्ष्मी नामक लड़की के जन्म से होती है। लड़की के पिता रामदज्जी ब्राह्मण हैं। वह दूसरी जगह से आकर पटरंगपुर में रहने लगे। रामदज्जी अपनी पत्नी की के साथ खुश थे। परंतु एक खवासन पर मोहित होने के कारण उसके साथ जंगल में रहने लगे। लक्ष्मी की सेवा उसकी मां करती है तब वह बड़ी होती है। लेखिका ने सामाजिक विषमताओं के साथ यथार्थ जीवन के संग्राम को कथा से जोड़ा है। एक सामान्य स्त्री का संघर्ष किन-किन परिस्थितियों में उसे मजबूती देता है। उपन्यास में युगीन परिस्थितियों का यथार्थ परक चित्रण मिलता है-

"इस जमाने से पहले के जमाने में
जल थल सब दूसरी ही किस्म का ठहरा ।
मनुष्य भी तब और-और किस्म के एणे
सुना, पहाड़ के बामणो के अगल-बगल
तब पंख होने थे।"[4]

इस उपन्यास में मुस्लिम संस्कृति का भी उल्लेख मिलता है। कुछ समय के लिए के लिए पटरंगपुर में मुस्लिमों का शासन आ गया था। हिंदू और मुस्लिम प्रजा को अलग-अलग रंग के टुकड़े लगाने का फरमान हुआ जिससे पता चल सके कि कौन हिंदू है और कौन मुस्लिम? "सुना कोई

कहने वाला हुआ कि अलग-अलग वर्गों के अलग-अलग रंगों के टुकड़े लगाने होंगे।"[5]

संकलन त्रय की दृष्टि से यह उपन्यास आंचलिकता के वातावरण को प्रस्तुत करता है। अंचल विशेष की बोली खान-पान एवं व्रत व्यवहार का विवरण मिलता है। ग्रामीण संस्कृति के साथ पहाड़ी जीवन का चित्रण बड़ी बेबाकी से किया गया है। संवाद-योजना इस उपन्यास में थोड़ा कमजोर है। कुछ विशेष स्थलों पर संवाद योजना प्रस्तुत है। भाषा और शिल्प के स्तर पर यह सफल उपन्यास है। आंचलिक बोली तथा देशज शब्दावलियों के साथ तत्सम-तद्भव शब्दों का बेधड़क प्रयोग मिलता है।

(ग) रास्तों पर भटकते हुए- मृणाल जी द्वारा लिखित इस उपन्यास का भावबोध बहुत विस्तृत है। इसमें राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन की समस्याओं को उनके संदर्भ में अंकित किया गया है। एक ही स्त्री के आंतरिक एवं बाह्य आयामों को भलीभांति जांच परख कर रखा गया है। उपन्यास का घटनास्थल दिल्ली के जनजीवन की कहानी है। उपन्यास की शुरुआत दिल्ली के यमुना पूरी के वर्णन से शुरू होता है। इस बस्ती में कथानायिका मंजरी रहती है। यहां अनेक राज्यों से आए हुए लोग रहते हैं। नायिका मंजरी दिल्ली में पढ़ाई करती है उसकी शादी एक डॉक्टर के बेटे से हो जाती है परंतु कुछ समय बाद दोनों में तलाक हो जाता है और मंजरी अपना अलग जीवन जीने के लिए एक पत्रकारिता की नौकरी करने लगती है। पत्रकारिता की सर्विस करते हुए भी उसे राजनीतिक दांव-पेचों से गुजरना

पड़ता है तब वह दुनिया का सच जानती है कि लोग राजनीति की आड़ में गलत धंधे में कैसे लिप्त हो जाते हैं? कुछ समय बाद मंजरी के जीवन में बंटी नामक युवक का प्रवेश होता है लेकिन जल्द ही उसकी मृत्यु हो जाती है। मंजरी चाहती है कि उसकी मृत्यु का कारण पता चल जाए परंतु यह संभव न हो सका राजनीति में बैठे चंद लोगों के कारण संपूर्ण सबूत मिटा दिए जाते हैं। वह सोचती है कि पत्रकार होते हुए भी वह किसी को न्याय नहीं दिला पायी। कुछ समय बाद मंजरी की मुलाकात पत्रकार मित्र पीसी से होती है। पीसी भी कहता है कि इस घटना की जांच करा लूंगा पर अंत में कुछ नहीं हो पाता। समस्त घटना राजनीति की आड़ में ही बंद हो जाती है तब पीसी कहता है कि- तुम्हारे भाई और डॉक्टर खान की सलाह ठीक थी। यह मामला सिस्टमेटिक फेल्योर का है। यहां तो आज अपना समाज, राजनीति सब साले सड़ रहे हैं। साला यह मामला शुरू से ही अंत तक राजनीति से गंधा रहा है।"[6]

रास्तों पर भटकते हुए उपन्यास में मंजरी और बंटी दो ही प्रमुख पात्र हैं। इसके अलावा गौड़ पात्रों में डॉक्टर, पार्वती, पीसी आदि हैं। देशकाल वातावरण की दृष्टि से इसमें दिल्ली महानगर की उठापटक वाली जिंदगी को दिखाया गया है। महानगरीय सभ्यता में बढ़ रही बेरोजगारी, त्रासदी एवं रिश्तों में आ रही दरार का बखूबी मूल्यांकन किया गया है। इस उपन्यास में लेखिका ने भाषा को मजबूती प्रदान की है। भाषा को कलात्मक एवं

भावात्मक ढंग से प्रयोग किया है। अनगढ़ शब्दों का प्रयोग न करते हुए सामान्य शैली में उपन्यास की कला को समझने का प्रयास किया है।

(घ) हमको दियो परदेश:- यह उपन्यास वेदना में ग्रसित एक छोटी सी बच्ची की आंखों में देखे गए संसार का चित्रण है जिसमें हम सभी कहीं न कहीं अपनी आंखो द्वारा देख लेते हैं। मृणाल पांडे की शोधपरक दृष्टि से कुछ छिप नहीं पाया है। सामाजिक गतिविधियों एवं विडंबनाओं को ऐसे उकेरतीं हैं जैसे वह स्वयं भोगा गया हो। खासकर जब वे स्त्री लेखन की बात कर रही हों तो वहां वे एक चित्र ही उपस्थित कर देती हैं। कथा के केंद्र में एक छोटी सी बच्ची को रखकर प्रसंग को आगे बढ़ाया है। एक बच्ची जब अपने ही परिवार में स्वयं अपने ऊपर जब दोहरे मानदंड को देखती है तब वह क्या सोचती होगी? क्या स्त्री का संसार यही सब देखने को बना है? साहित्य और समाज में यह दो मुहांपन पर कब तक चलेगा? प्रत्येक साहित्यकार, आलोचक एवं नारी विमर्श पर बयानबाजी करने वालों को सोचना चाहिए। इस उपन्यास की कथा कई प्रसंगों में है जैसे-अथ मयूर कांड, उड़ने वाला सांप, अब्दुल्ला, हमारी मौसीयां, हमारा भैया, पेटिकोट की बयार एवं यात्रा। कथाकार मृणाल पांडे ने एक बच्ची टीनू के माध्यम से कथा को विस्तार दिया है। टीनू अनुमानतः डेढ़ साल की है। बड़ी बहन दीनू उससे 3 वर्ष बड़ी है। वह अपनी बड़ी बहन दिनू की हर बात पर विश्वास रखती है। दीनू जो बात कह दे वही उसके लिए सत्य है। वह नैनीताल में रहती है। एक दिन ऐसा वाकया होता है कि उसके दादा की मृत्यु हो जाती

है। घर में बच्चों को पता न चले इसलिए उन्हें नौकर के संग पहाड़ घूमने के लिए भेज दिया जाता है। दीनू बताती है कि दादा मर चुके हैं परंतु टीनू यह सब नहीं जानती दूसरी और जब टीनू अपने मामा के घर जाती है तो वहां अपने ममेरे भाई अनु और उमा के साथ खेलती है। वहां वह लड़का और लड़की में फर्क देखने को पाती है कि जो खिलौने या चीजें लड़कों के लिए उपलब्ध है वह लड़कियों के लिए पाबंदी। एक बच्ची समाज को अपनी दृष्टि से आंकती है। वह सामाजिक विषमताओं से रूबरू होती है। समाज में बेटियों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता है और खासकर बेटी की बेटियों के साथ और ही होता है। उपन्यास में यह बात बच्ची को कचोटती है। लड़के और लड़कियों के अधिकारों की तुलना यहां प्रस्तुत स्थित ही नारी विमर्श के केंद्र में है। टीनू इस तरह के बर्ताव को ऐसे समाज में देखती है जहां लड़कों को समस्त छूट है पर लड़कियों को उनसे परहेज करना पड़ेगा। वह सोचती है कि- भाइयों को दीने महल दुमहले हमका दियो प्रदेश।

(च) अपनी गवाही:- अपनी गवाही नामक उपन्यास पत्रकारिता और राजनीति पर आधारित है। मृणाल पांडे का यह उपन्यास आत्मकथात्मक उपन्यास है। यदि इसे उनके जीवन की कथा कहा जाए तो सार्थक ही है। उपन्यास की नायिका कृष्णा, मृणाल पांडे हैं। यह कथा फ्लैशबैक शैली में कही गई है। कृष्णा तस्वीर के सहारे बीते दिनों को स्मृति में लाती है और दिन-रात उन्हीं के बारे में मंथन करती रहती है। वह सुकून से जी नहीं पाती। कृष्णा

के नाना कुमायूं में रहते हैं। वे डॉक्टर हैं। छुआछूत का विरोध करते हैं जबकि कृष्णा की नानी परंपरावादी है। वह कर्मकांड में विश्वास करती हैं। यहां भी सामाजिक अंतर्विरोध दिखाई देता है। स्त्री पुरुष की विचार में भिन्नता नारी विमर्श की कड़ी को जोड़ता है। कृष्णा के पति सरकारी नौकरी में है। उन्हें ट्रांसफर के कारण खानाबदोश की जिंदगी जीना पड़ता है। कृष्णा तथा उसके पति को ऐसा जीना पसंद नहीं है। तब कृष्णा के पति सर्विस छोड़ देते हैं। कृष्णा भी एक विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापक थी। कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर चुकी है लेकिन अंत में सब कुछ छोड़कर पत्रकारिता में जुड़ जाती है। इसके लिए वह अपनी मुन्नू चा से सलाह भी लेती है लेकिन उनका मानना था कि एक महिला को पत्रकारिता के क्षेत्र में कठिनाई आती है। दूसरी बात पत्रकारिता अंग्रेजी से करो हिंदी से नहीं ऐसे पत्रकारों की कोई वैल्यू नहीं होती लेकिन कृष्णा हिंदी में पत्रकारिता करती है। हिंदी पत्रकारिता की नौकरी न करने के संबंध में उनके चाचा का कहना था कि-" बेशक प्रिंट मीडिया में जाओ लेकिन हिंदी में क्यों जब तुम्हारे पास अंग्रेजी में मास्टर्स डिग्री है तो भाषाई पत्रकारिता की गंदी नाली में क्यों गिरती हो।"७

उपन्यास में हिंदी पत्रकारिता और अंग्रेजी दोनों में अंतर को भी स्पष्ट किया गया है। एक अंग्रेजी पत्रकार को यहां उचित सम्मान तथा सैलरी है, वही हिंदी पत्रकार को फालतू समझा जाता है। खासकर यदि इस क्षेत्र में स्त्रियां हो तो उन्हें सस्ते वेतन पर कार्य करने के लिए रख लिया जाता है।

अपनी गवाही उपन्यास की लेखिका ने अपने जीवन के बुनियादी समस्याओं की गवाही दिया है। एक स्त्री के पास जीवन में कितनी संघर्ष होते हैं? घर के चूल्हे चौके से लेकर रोजगार की दुनिया तक उसके साथ कितने छलावे होते हैं? ऐसे बिंदुओं को लेखिका ने उपन्यास का मुख्य अंश बनाया है।

(छ) देवी (उपन्यास)- मृणाल पांडे का यह उपन्यास रिपोर्टपरक शैली में लिखा गया है। उपन्यास में लेखिका ने देवियों की कथा को आधार बनाकर अपने परिवार, समाज तथा कई प्रदेशों की स्त्रियों का उदाहरण पेश किया है। स्त्रियों के दैनिक जीवन की समस्याएं, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक शोषण को उपन्यास के केंद्र में रखा है। देवियों के तीन रूपों महालक्ष्मी, महाकाली तथा महा सरस्वती के ओजपूर्ण कार्यों को दिखाकर स्त्रियों की ऊर्जा एवं शक्ति को बढ़ावा देने की कोशिश की है। उनका मानना था कि हमारी देवियां भी प्राचीन काल से संघर्ष करती रही हैं। उनके ऊपर भी असुरों एवं आततायियों के आक्रमण हुए हैं पर उन्होंने अपनी सुरक्षा स्वयं की। अपनी शक्ति को स्वयं बढ़ाया, असुरों का विनाश कर सृष्टि का कल्याण किया। आज भी नवरात्र आदि के शुभ अवसरों पर देवियों की स्तुतियां की जाती हैं। नारी भी देवी का रूप है पर आज के समय में पर्याय बदल गया है। कथन में तो देवी कह दिया गया पर सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक दृष्टि से उनके साथ देवियों जैसे बर्ताव कम हो रहे हैं।

अपने ही घर परिवार में स्त्रियां दोयम दर्जे का शिकार हैं। उपन्यास में मुख्य पात्र बड़ी अम्मा है। उनके संपूर्ण जीवन को देवियों के समक्ष दिखा गया है। हमारी देवियां समस्त सृष्टि का कल्याण करती रही हैं। देवियों की शक्ति तथा पुनीत कार्यों की गाथा सुनकर आज बहुत से लोग देवियों के उपासक भी हैं। वही दूसरी ओर समाज के लोग घर की देवियो के साथ बुरा बर्ताव करते हैं। उन्हें मानसिक, शारीरिक प्रताड़ना देते हैं। आए दिनों स्त्रियों पर अत्याचार अखबारों, मीडिया आदि के माध्यम से देखने-सुनने को मिलते हैं। क्या यह समाज अपनी मनोवृति को स्त्रियों के प्रति बदल पाएगा? कथाकार ने देवियों की समयातीत कथा को आधार बनाकर स्त्रियों की कथा कही है क्योंकि स्त्री होने के नाते देवियों से स्त्रियों का रिश्ता अंतरंग का रहा है। जो पीड़ा और समस्या देवियों के जीवन में है वही स्त्रियों के भी हैं।

(ज) सहेला रे (उपन्यास)- भारतीय परिवेश हमेशा से संगीत की दुनिया का शौकीन रहा है। संगीत का ऐसा दौर भी था कि तब संगीत के बड़े-बड़े जानकार हुआ करते थे। यह दुनिया के लिए कम अपने लिए ही गाते थे और सुनने वाले उनके दीवाने थे। उनके स्वरों को सुनकर लोग कंठस्थ भी कर लेते थे। उनका मनमोहक संगीत किसे अच्छा नही लगता था। ऐसा भी नहीं है कि आज के कलाकारों जैसे बहुत प्रसिद्ध नहीं थे। वह शायद आज के संगीतकारों से ज्यादा फेमस थे। उनकी चर्चा केवल भारत में ही नहीं विदेशों में भी होती थी लेकिन समय बीतता गया और वे अब एक निश्चित

समय सीमा के बाद अब इस दुनिया में नहीं है परंतु आज भी उनके संगीत को सुनकर सब का हृदय खुश हो जाता है। उनके स्वर और संगीत की दुनिया का बाजार अभी बंद नहीं हुआ है। आज ही लोग उनके गानों को पसंद करते हैं। उनके संगीत की आत्मा को हृदय में लेकर संपूर्ण जनमानस कभी-कभी तो किसी को सुनना ही नहीं चाहता। यह बात और थी कि पुराने संगीतकारों के बाजार लोकल मार्केट था पर प्रसिद्धि कम नहीं थी।

मृणाल पांडे का यह उपन्यास अपनी कलात्मक शैली में ऐसे संगीत के दास्तान का चित्र खींचता है जहां बड़े-बड़े संगीतकारों की तह मिल जाती है। इसमें स्त्री संगीतकारों का जिक्र लेखिका ने अस्मिता विमर्श के संदर्भ में ही किया है। पहाड़ पर अंग्रेज बाप से जन्मी अंजली बाई और उसकी मां हीरा का जिक्र है। दोनों ही अपने-अपने समय की मशहूर गानेवालिया हैं। वह सिर्फ गानेवालिया ही नहीं अपनी संस्कृति एवं सभ्यता की वाहक भी हैं। इस दौर की ऐसी गानेवालियां हैं जो अपनी खूबसूरती एवं शिष्टाचार की मिसाल भी हैं। पहाड़ की बेटी हीरा एक अंग्रेज के हीवेट को अच्छी क्या लग गई उसने उस समय के अंग्रेज अफसरों की तानाशाही का फायदा उठाकर हीरा को अपने घर में रख लिया और उसने अपनी बेटी का नाम विक्टोरिया मसीह रखा। कुछ समय बाद हीवेट की लाश जंगलों में मिली और उसकी दुनिया यहीं से खत्म हो गई। दुलार में पल रही बेटी विक्टोरिया एक झटके में ही अनाथ हो गई तब उसको शरण मिली बनारस में, जो संगीत का एक बड़ा घराना था। संगीत के जानने वाले तथा कला शैली का

गढ़ बनारस तब अपनी कला के लिए मशहूर था। बनारसी शैली और कला की चर्चा आज भी होती है। बड़े-बड़े संगीतकार, कलाकार या साहित्यकार बनारस की जमीन से जुड़े रहे हैं।

इस उपन्यास की कथा को लेखिका ने अपने साहस, मेहनत, यात्राओं में लोगों के साथ मिलकर, उस पर विस्तृत चर्चा करके, पुस्तकों में बिखरी प्रतियों को इकट्ठा करके, लिखित, मौखिक कहानियों को एकत्र करके बड़ी ईमानदारी से संजोया है। यह उपन्यास पत्र शैली में लिखा गया उपन्यास है। आंकड़ों, घटनाओं, कथाओं तथा स्थितियों की युगीन जानकारी को एकत्र करके छोटे-छोटे टुकड़ों में इसे लेखिका ने बांचने का प्रयास किया है, इतना ही नहीं यह उपन्यास कुछ जासूसी उपन्यास जैसा सुख भी देता है। लेखिका ने गानेवालिया, तवायफों एवं तमाम स्त्री संगीत साधकों की कथा को एक झटके में कहा है जैसे- "जानकीबाई की गायकी 'बिन बदरा बिजुरी, कलकत्ते की गौहरजान की होरी, बंगला की शशिमुखी शशिबाला, इलाहाबाद की मुन्नीजान, बनारस की शिवकुंवर, पानीपत की मिस अमीर जान और आमेंर की मलका जान की गायकी का जादू उत्तर भारत के सर चढ़कर बोलने लगा था।"[8]

कहानी संग्रह -

मृणाल पांडे के उपन्यासों एवं नाटकों की तरह उनकी कहानियां भी बहुत प्रसिद्ध है। कहानीकार की दृष्टि से कहा जाए तो मृणाल पांडे समकालीन

महिला कहानीकार है। इनकी कहानियां किसी आधार को ही नहीं बल्कि उनके अंदर मूल्यों को खोजती है। तो कई बार तो ऐसा लगता है की हम कहानियां सुन रहे हैं और अपना निष्कर्ष भी निकाल रहे हैं। कहानी में उलझी हुई गुत्थी पाठक बड़ी आसानी से समझ जाता है। इतना ही नहीं तपाक से वह उसका समाधान भी निकालना चाहता है। नारी विमर्श ही नहीं, नारी मनोविज्ञान की पहल भी इनकी कहानियों की मूल संवेदना है। कुछ कहानीकार तो कहानियों में केवल कथ्य तलाशते हैं जबकि मृणाल पांडे समस्याएं, मूल्यबोध,स्वयं के अनुभव एवं शोधपरक आख्यान प्रस्तुत करती हैं। घर-परिवार के रिश्तों को बिल्कुल सीधे-सीधे एवं बड़ी बारीकी बताती हैं। कई जन्मों की कथा को आधार बनाकर अपनी कहानियों एवं साहित्यिक विधाओं का ढांचा तैयार करती है। जैसे नामवर सिंह का मानना है कि कहानियां छोटी मुंह बड़ी बात करती है उसी प्रकार मृणाल पांडे अपनी कहानियों के छोटे कथन में मूल्य, संवेदनाएं उतार देती है। यह बात अलग है कि कभी-कभी उनके बताने का ढंग बदल जाता है। कथ्य शिल्प के अनुसार ये आक्रोश को नहीं रोक पाती और तत्कालीन समाज के ऊपर अपनी पूरी भड़ास निकाल देती है। कोई भी स्त्री जब संघर्ष करते-करते थक जाती हैं तब वह भी अपने मनोवृति को कह डालती हैं।

मृणाल पांडे के मुख्यतः तीन कहानी संग्रह है जिसके अंतर्गत कई कहानियां हैं। बचुली चौकदारिन के अंतर्गत निम्न कहानियां हैं जैसे- बिब्बो, पितृदाय, कुत्ते की मौत, प्रतिशोध, एक नीच ट्रेजडी, एक स्त्री का विदागीत,

प्रेमचंद : जैसा कि मैंने उन्हें देखा, जगह मिलने पर साइड दी जाएगी उर्फ़ तीसरी दुनिया की एक प्रेम कथा, परियों का नाच ऐसा, लक्का-सुन्नी, दूरियां, हमसफर, चार नंबर सुनहरी बागलेन, एक थी हंसमुख दे, रिरिक्त, लेडीज टेलर, बचुली चौकीदारिन की कढ़ी आदि।

इनकी यह सभी कहानियां स्त्री अस्मिता पर आधारित हैं। एक सामान्य स्त्री इस तरह अपनी ही दुनिया में पिसती रहती है। वह सोचती भी है कि उसका मानदंड कहीं निर्धारित है कि नहीं। जीवनबोध और मूल्यबोध की टकराहट अक्सर इनकी कहानियों में मिल जाती है। नारी पात्रों की संवेदना नारी विमर्श के आलोचकों के लिए सवाल खड़ा करती है। एक झटके में नारी विमर्श पढ़ने वाले या उनपर बहस करने वालों के लिए कौतूहल पैदा करता है। इनके पात्र अन्य रचनाकारों की तरह गढ़े गए नहीं हैं बल्कि स्वयं कहीं न कहीं अपने से पाए गए हैं। उनकी आत्माभिब्यक्ति स्वयं नारी पात्रों की आहट है जो पूरे मानव समाज को बेचैन करती है ।अन्य महिला कहानीकारों की अपेक्षा मृणाल पांडे की कहानियां समाज को जीना सिखाती है। उनकी कहानियों में दर्द भी है, सुख भी है, घुटन भी है, टूटन भी है, रिश्तों की अहमियत, नैतिक मूल्य, नारी मनोदशा तथा महानगरीय सभ्यता के अंधेरे में पल रहे रिश्तों की बुनावट तथा समसामयिक मुद्दों की पहचान भी मिल जाती है। कहानी पर बात करते हुए मृणाल पांडे कहती हैं कि-" हर कहानी या उपन्यास घटनाओं के जरिए सत्य से एक आंशिक और कुतूहल भरा साक्षात्कार होता है।साहित्य हमे जीवन जीना सिखाने के बजाय

टुकड़ा टुकड़ा 'दिखाता' है, वे तमाम नर्क-स्वर्ग, वे राग-विराग, वे सारे उदारता और संकीर्णता- भरे मोड़, जिनका सम्मिलित नाम मानव जीवन है।"[9]

मृणाल पांडे का अगला कहानी संग्रह है 'चार दिन की जवानी तेरी'- इस संकलन में कुछ प्रसिद्ध कहानियां हैं जैसे- लड़कियां, एक पगलाई सस्पेंस कथा, उमेश जी, कर्कशा, हिरदा मेयो का मसला, मुन्नू चा की अजीब कहानी, बीज, सुपारी फुआ, अब्दुल्ला, विष्णु दत्त शर्मा के लिए एक समकालीन कथा, चार दिन की जवानी तेरी आदि। मृणाल पांडे जी के इस संकलन की कहानियां अपनी जमीन में जड़ों को फैलाती हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि उनके कथा में जीवन का प्रतिबिंब साफ-साफ दिखाई दे रहा है। उनके यहां पहाड़ी जीवन अपनी खुशहाली एवं चेतना के साथ प्रस्तुत मिलता है। कहानियों में जीवन की मनोदशा, कार्य प्रगति एवं संपूर्ण योजनाएं बिल्कुल नपी-तुली दिखाई देती हैं। इनमें हिर्दा मेयो जैसा चरित्रवान व्यक्ति भी है। उसके हंसी में कुंठित जीवन छुपा हुआ है जो सीधे पहाड़ की छाती से टकराता रहता है फिर भी वह अपनी अस्मिता पहाड़ी जीवन में ही ढूंढता है। केवल एक मंत्र से बवासीर ठीक करने वाले भ्रम को पालने वाला हरूवा के साथ, विदेश में रहने वाले मुन्ना चा जैसे चरित्र भी साथ साथ हैं। उन्नति के नाम पर पहाड़ की संजीवनी सोख लेने वाली शक्तियां भी हैं। प्राकृतिक दृष्टि से धरातल पर पड़ने वाली छाया की कथा 'बीज' कहानी में है। यह कहानी संग्रह नारी विमर्श की स्थितियों की गवाही देता है। इसमें 'लड़कियां' जैसी कहानी स्त्री विमर्श की गहराइयों में फंसी संवेदना को

टटोलती हैं। लड़कियों के साथ हो रहे बर्ताव, एवं उनके मनोदशा को मृणाल पांडे ने बड़े मनोवेग के साथ व्यक्त किया है जिसमें मासी कहती है कि-" जब तुम लोग लड़कियों को प्यार ही नहीं करते तो झूठ मूठ के उनकी पूजा क्यों करते हो? मेरी आवाज रुलाई से फटती, है गुस्से में मेरे मन मे आता है कि आरती का जलता कपूर निकलकर अपने इस दगाबाज गले को दाग दूँ। क्यों? मैं फिर पूंछना चाहती हूँ, पर रो पड़ने के डर से चुप हूँ। मैं रोना नहीं चाहती। इनके सामने, खासकर।"[10]

'यानी कि एक बात थी' मृणाल पांडे का चर्चित कहानी संग्रह है जिसमें 28 कहानियां है। ये कहानियां जीवन एवं मानव मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं। स्त्री विमर्श की पृष्ठभूमि पर आधारित इनकी कहानियां नारी जीवन की परतों को खोलती हैं जहां स्त्री का संसार सरल एवं सामान्य दिखाई देता है। इसमें संवेदना भाषा के साथ मिलकर एक नए आयाम को रेखांकित करती है। स्त्री विमर्श के एकांकी एवं जीवन के टकराहटों का चित्रण मृणाल जी ने उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया है। एक स्त्री की बेचैनी एवं पीड़ा की कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। रति जैसी नायिका की सोच को 'कोहरा एवं मछलियां' जैसी कहानियों में व्यक्त किया है कि जीवन में कठिनाइयां तो हैं साथ ही साथ बाहरी वातावरण में व्यक्त कोहरा भी है जिसके कारण उसमें बेचैनी है। एक तरह से मौसम के साफ होने की चाहत दूसरी ओर मस्तिष्क में चल रहे द्वंद्व को अंदर से उबरने की चिंता भी है।

मृणाल पांडे इस कहानी के माध्यम से नारीवाद का खाका प्रस्तुत करतीं हैं। साहित्य को समाज के साथ जोड़कर उसमें व्यक्त जीवन को नया रूप प्रदान करती हैं। कहानीकार मृणाल पांडे कहानी को अपनी परिस्थिति के अनुसार आंकती हैं हर घटनाएं भले ही अतीत की हैं। आज भोगवादी संस्कृति में व्यस्त मानव रिश्तों से दूर होता जा रहा है। नगरीय सभ्यता की चहल पहल की छाप उसके ऊपर पड़ती जा रही है जहां वह केवल अपनी ही समस्याओं में व्यस्त है। इसी समाज का हिस्सा स्त्रियों का जीवन कई समस्याओं से जूझता हुआ जीवन की कई परिस्थितियों को प्रकट करता है। मृणाल जी की कहानियों में कल्पना कम सच्चाई ज्यादा है क्योंकि वह यथार्थ की अंतिम अवस्था टारगेट करती हैं। इस पुस्तक की भूमिका में वे कहती हैं की हो सकता है कि-" कई लोग मुझसे इस बिंदु पर असहमत हों। कई लोगों को मेरे टी. वी. से कभी-कभी आ जुड़ने के बाद भी स्वयं अपनी कहानियों के दूरदर्शनीकरण के प्रति वैराग्य बड़ा खला भी है, पर मैंने अपने मन की बात ईमानदारी से कह दी।"[11]

नाटक-

मृणाल पांडे लेखिका तो है ही साथ ही साथ नाट्य विधा पर काम करने वाली प्रतिष्ठित कलमकार हैं। नाट्य शिल्प एवं नाट्य प्रयोगों की नई दुनिया का रेखांकन इनके द्वारा देखने को मिलता है। आज नाटक भले ही बहुतायत लिखे जा रहे हैं पर मृणाल पांडे ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है

कि हिंदी में मंचन करने के लायक मौलिक नाटक नहीं लिखे जा रहे हैं। नाटक की बारीकियों एवं उनकी परंपरा का अवलोकन करने के बाद मृणाल पांडे ने नाटक विधा पर लेखनी चलायी। इनके नाटकों के केंद्र में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी,शोषण, राजनीतिक दांवपेच, शिक्षा तथा स्त्री की सामाजिक, शारीरिक समस्याएं शामिल हैं। स्त्री की मनोवैज्ञानिक सोच को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। अपने ही घर परिवार में अपने ही लोगों के बीच स्त्री सुरक्षित नहीं है। हर क्षण वह शोषण का शिकार हो रही है। पिछले कुछ दशकों से वह अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति सचेत हुई है जिससे वह निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। रंगमंचीयता की दृष्टि से मृणाल पांडे के नाटक सराहनीय तो हैं ही साथ ही साथ समकालीन समस्याएं भी मानव के अंतर्मन में टकराती हैं। पाठक या श्रोता स्वयं उसमें गुत्थी सुलझाने लगता है। वह झट से निर्णय निकाल लेना चाहता है। समस्यात्मक नाटक के साथ-साथ इनके नाटक लोक संस्कृति, लोक संवेदना को व्यंजित करते हैं। रूढ़ियों एवं जटिल मानसिक प्रवृत्तियों पर कुठाराघात करते हैं जिसके कारण इनको कई बार आलोचनाएं भी झेलनी पड़ी। हिंदी में ऐसे बहुत कम लेखक हैं जो सामाजिक लेखन की सरल रेखा के विपरीत लिखते हैं। मृणाल पांडे खुलकर विरोध करती हैं। स्पष्टवादिता एवं मानव अस्मिता के वजूद के पुनर्मूल्यांकन में प्रति सचेत होने के कारण इनके नाटक पाठकों के निगाह में रहते हैं। उन्हें पढ़कर भुलाया नहीं जा सकता बल्कि उन पर कुछ नई जानकारी पा लेने की जिज्ञासा बनी रहती है। जिस तरह से इनके

नाटक हैं उसी प्रकार के नाटकों पर चर्चा करते हुए गोविंद चातक कहते हैं कि-" नाटक, अभिनेता,वेशभूषा दृश्यबंध, दृश्य योजना, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि प्रभाव, रूप सज्जा, संगीत, नृत्य, दर्शक आदि। यद्यपि ये वाह्य उपकरण हैं लेकिन नाटक के शरीर को जीवन्त अनुभव के रूप में दर्शकों तक पहुंचाने में इनका बहुत बड़ा संयोग है। इनमें से कोई भी अलंकरण नहीं है और न वह अपने से अलग महत्वपूर्ण है। इन सबकी पहचान महत्ता नाटक की मूल संवेदना को उसके जीवन्त वातावरण के साथ दर्शकों तक संप्रेषित करने में है।"[12]

मृणाल पांडे का पहला नाटक 'राम रचि राखा' है। यह नाटक स्त्री की चेतना और उसकी अकुलाहट को व्यक्त करता है। बड़े घरों की स्त्रियों के आज यही हाल है। यह बात अलग है कि वे झटके में कह दें कि वे संपूर्ण समस्याओं से मुक्त हैं परंतु उनके जीवन की वास्तविक स्थिति कुछ और है। नाटक में धन्ना सेठ अपनी प्रजा के साथ अपनी स्त्री पर भी अत्याचार करता है। उसे कुछ न बताने को धमकी भी देता है। प्रजा की बातों को सुनना नहीं चाहता है। स्त्री समस्या तो इस नाटक में है ही साथ ही साथ यह राजनीति से ओतप्रोत नाटक है। धन्ना सेठ का पुत्र मन्ना सेठ बिल्कुल अलग स्वभाव का है। वह प्रजा की मदद करता है। उन्हें सुखी देखना चाहता है। प्रजा की समस्या को अपनी समस्या समझता है। मन्ना सेठ सावित्री की समस्या से बहुत दुखी होता है। सावित्री का पति अपनी पत्नी पर अत्याचार करता है, उसे पीटता है। वह अपनी समस्या किससे कहती?

आज के समय में भी स्त्री के पास ऐसी समस्याएं हैं। वह लोक लाज और पारिवारिक दबाव के चलते समाज में अपनी बातें नहीं रख पाती। यदि वह कहने का साहस भी करती है तो समाज ही उसे दोषी ठहराने लगता है। मृणाल पांडे पत्रकारिता से जुड़ी होने के कारण नाटकों में ऐसी विडम्बनाओं को दर्शाती हैं। उनका लेखन स्त्री की बात करता है, उसे सहानुभूति प्रदान करता है। इतना ही नहीं वह समस्या का समाधान भी करता है। सेठ मन्ना सेठ सावित्री की समस्या निराकरण करने की ठान लेता है वह उसके पति को पहले समझाता है जब वह नहीं सुनता तब उसकी हत्या भी कर देता है। सावित्री की समस्या का समाधान तब हो जाता है जब वह मन्ना सेठ को एक सामान्य पुरुष नहीं बल्कि देवता के रूप में देखती है। सामाजिक विडंबनाओं में उलझी स्त्री अपना मुक्त जीवन जीना चाहती है। वह दबाव के बंधनों को तोड़ देना चाहती है। वह मुक्त गगन में सांस लेना चाहती है। सावित्री इसी तरह की स्त्री थी जो अपने पति के अत्याचारों से स्वतंत्र होना चाहती थी। अगर इस नाटक का स्त्री समस्या के नाटक की तर्ज पर मूल्यांकन किया जाए तो हद तक प्रशंसनीय है।

तीन अंकों में लिखा गया यह नाटक राजनीतिक चहलकदमी को दर्शाता है। राजनीति के नाम पर रोटी सेकने वालों की अच्छी खबर भी लेता है। राजनीति के नाम पर लोग आज जीवन मूल्यों एवं व्यक्ति की महत्ता को भूल गए हैं। कुर्सी के मद में लिप्त व्यक्ति समस्त जनता को खिलौना

समझ लेता है। वह उसके साथ पशुवत व्यवहार करता है। यही कारण है कि आज हमारे मूल्य टूट रहे हैं। मृणाल पांडे राजनीति को केवल राजनीति तक सीमित रहने की बात करती हैं। धन्ना सेठ अपने राज्य में बेरोजगारी, भुखमरी और लोगों की परेशानियों को नहीं देखता है। वह केवल ऐय्याशी करता है। शासन तंत्र विफल दिखाई देता है यहां तक की चोरी मन्ना सेठ करता है और इल्जाम किसी और पर लगता है। पुलिसिया तंत्र इतना निष्क्रिय हो गया है कि वह पता नहीं लगा सका कि यह चोरी किसने की। मन्ना सेठ अपने पिता की कमियों को उजागर करता है। यह केवल धन्ना सेठ की कमियां ही नहीं है। यह आज के शासन तंत्र की कमियां हैं। लेखिका ने शासन तंत्र के लचीलेपन, उसकी गलत नीतियों पर प्रहार किया है। मन्ना सेठ अपने पिता की नीतियों को नकार देता है। वह ऐसी संपत्ति, व्यापार नहीं चाहता जो जनता को लूट कर बनाया गया है। इसलिए वह(मन्ना सेठ) कहता है कि -"अन्यायी न्याय व्यवस्था को चुनौती दे सकने को चोरी की, तो पकड़ा जाने के बजाय सात-सात कमरे संपदा से भर गये, डाका डाला तो शहर भर में जै-जयकार फैल गई है और दीवान जी राजा साहब की ओर से अशर्फियों का तोड़ा भेंट करने चले आये। उफ! मेरा यह जीवन आप लोगों ने कैसा नरक बना डाला है।"[13]

मृणाल पांडे का दूसरा नाटक 'आदमी जो मछुआरा नहीं था' है। यह नाटक मध्यवर्गीय समाज की त्रासदीयों का पुनर्मूल्यांकन करता है। वह पुरानी रूढ़ियों, अंधविश्वासों, हठधर्मिता का विरोध करता है। मध्यवर्गीय

समाज में नारी की दशा और दिशा को व्यक्त करता है। नारी की महत्वाकांक्षा क्यों खतरे में है? यदि इस नाटक में एक बड़ा प्रश्न है। समकालीन बाजारीकरण के कारण पारिवारिक स्थितियां बिगड़ रही है। व्यक्ति स्त्री को वस्तु समझ बैठा है। पैसे के लालच के कारण अय्याशी के प्रति मोह बढ़ता जा रहा है। इससे मानवीय रिश्ते टूट रहे हैं। उनमें जो दरारे आ रही हैं वह भविष्य में मानव के लिए संकट ही पैदा करेगा। पात्र रुक्मिणी मध्यवर्गीय समाज की स्त्री है लेकिन वह उच्च वर्ग की शान शौकत रखती है। उसके मन में भोगवाद की जो चेतना व्याप्त हो गई है वह मध्यवर्ग से उसे अलग कर रही है। मध्यवर्गीय समाज अपने अस्तित्व को जिंदा रखना चाहता है यही कारण है कि वह उच्च वर्ग में शामिल नहीं होना चाहता और उच्च वर्ग उसे लेकर चलना नहीं चाहता।

रुक्मिणी अपने पति के स्वभाव को पहचानती है फिर भी वह उच्च वर्ग की जिंदगी जीना चाहती है। भूमंडलीकरण के दौर में व्यक्ति शान शौकत में ही पागल हो गया है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण वह रिश्तों से कम पैसों से ज्यादा प्यार कर रहा है। फैशन की चमक दमक में वह रिश्तों को भूल रहा है। रुक्मिणी कुछ ऐसी ही दुनिया की ओर बढ़ रही थी और वह नंददुलारे की समस्याओं को भी समझती है परंतु अपनी महत्वाकांक्षा और स्वाभिमान को कमजोर नहीं होने देना चाहती। वह अपने पति से कहती है कि-"तुम दूसरों से अलग हो अनुभव में, उम्र में वो बड़े हैं तो क्या

हुआ? तुम एक बार मुंह खोलकर मांगो तो सही। मना करने का सवाल नहीं।"[14]

रुक्मिणी एक अलग दुनिया में जीना चाहती है जहां आजादी हो कोई बाधा न हो। वह बड़ी बड़ी शान शौकत मैं पड़कर दुनिया को दिखाना चाहती है कि मैं भी सब कुछ कर सकती हूं। मेरी भी अपनी दुनिया है जो किसी से कम नहीं है। रुक्मिणी बड़े आदमी की पत्नी होकर बड़ी-बड़ी पार्टियों में जाकर दावत खाने और पार्टी देने की शौकीन है। कांचीपुरम साड़ी पहन कर घूमती है और धूप का चश्मा पहनकर महंगी गाड़ियों से चलना चाहती है। इसके विपरीत नंददुलारे भ्रष्टाचार के खिलाफ हैं वह शान शौकत से कम मतलब रखते हैं। वह ऊंचा पद नहीं चाहते रुक्मिणी उन्हें आगे ले जाना चाहती है उन्हें कमजोर नहीं होने देना चाहती। स्त्री कमजोर होकर टूटना नहीं चाहती, वह सदैव विकास चाहती है। जीवन में नई क्रांति, उत्साह का वह प्रतीक है। वह अपने बल पर जीना चाहती है, किसी से खैरात नहीं मांगती। रुक्मिणी सदैव पति का उत्साह बढ़ाती है। वह अपने पति से कहती है कि-"आपकी इस भलमनसाहत भरी चुप्पी को लोग कायरता की निशानी समझ बैठते हैं। एक बार दिखा तो दीजिए उन्हें की गरजने वाले बरसते भी हैं। कभी कारण तो कभी फुहार। जरा में संजीदगी की परतें कुछ काटिए, कुछ हंसी दिल्लगी कुछ दिलजोई, कुछ रौब-दाब, धमकी, लोगों को ऐसी ही बस में करना होता है।"[15]

'काजल की कोठरी' मृणाल पांडे का बड़ा चर्चित नाटक है। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित यह नाटक मानव जीवन की स्थितियों को व्यक्त करता है। काजल की कोठरी नाटक में सरला नामक की स्त्री के शोषण का चित्रण मिलता है। सरला के पिता अपनी संपूर्ण जायदाद सरला के नाम कर देते हैं। उस वसीयत के कारण सरला को अपने परिवार के लोगों के साथ विरोध भी झेलना पड़ा। भाइयों के कुचक्र में पढ़कर सरला कुछ न कर सकी। यह नाटक देवकीनंदन खत्री के उपन्यास काजल की कोठरी का नाट्य रूपांतर है। इसमें सामंती व्यवस्था के दांव पेच उसके नियम शर्तों आदि का अंकन है। इस नाटक बारे में मृणाल पांडे का मानना है कि-" पर उपन्यास पढ़ते-पढ़ते मुझे लगा कि हमारे समय तक आते-आते सामंती दुनिया का वह मूल्यपरक ढांचा ऐसा चरमरा चुका है कि आज पूरे कथानक में अनेक विडंबनापूर्ण संभावनाएं उभर आयी हैं। मैंने सिर्फ इतना किया है की विडंबना पूर्ण दरारों को तनिक चौड़ा कर दिया है और उससे पूरा कथानक अपने आप एक फर्क आकार लेने लगता है। यह सवाल उठने लगता है जो यकीनन उस समय अकल्पनीय थे।"[16]

मृणाल पांडे के इस नाटक के माध्यम से तवायफों की समस्या को भी उठाया है। समाज में उन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाता है पर उनका फायदा सब उठाना चाहते हैं। समाज उन्हें बदनाम भी करता है और शोषण भी। कुल मिलाकर कहा जाए तो उनके साथ दोहरा शोषण होता है। अपने ही परिवार से अलग कर दी जाती हैं ।तवायफों का दर्द मृणाल पांडे ने स्त्री

विमर्श के संदर्भ में व्यक्त किया है। नाटक में सरला को जब उसके घर परिवार के लोग परेशान करते हैं। उसके चाचा तथा भाई उसकी संपत्ति हथियाकर उसको मार देना चाहते हैं तब बादी तवायफ हरनंदन को संपूर्ण बातें बताती है तथा उसकी जान बच जाती है। सरला को अपने परिवारजनों के प्रति अनुराग है पर वहीं वे लोग उसे देखना नहीं चाहते। संपत्ति के कारण आज भी स्त्रियों के साथ दोहरा व्यवहार हो रहा है। यदि आज लड़की अपने भाई की संपत्ति में हिस्सा लेती है तो उसे अपमान की दृष्टि से देखा जाता है जबकि कानूनन उसे यह अधिकार प्राप्त हैं। सरला हरनंदन से विवाह करना चाहती थी जबकि उसका चाचा नहीं चाहता था। वह चाहता था कि वह शादी न करें जिससे यह संपत्ति हमको मिल जाय। सरला अब बिल्कुल अलग होना चाहती थी। उसको पारिवारिक रिश्तों से मोहभंग हो चुका था। स्त्री जीवन की समस्या का चित्रण करते हुए दीप्ति खंडेलवाल 'दो पल की छांव' कहानी में कहती हैं कि-"अब वह(स्त्री) जान-बूझकर एकांत तलाशती है। निर्जन,नीरव, एकांत, जहां स्वयं के निकट केवल वह स्वयं ही हो। जहां वह अपनी चलती सांसो को महसूस कर सकें,,,,,,,, जहां जिंदगी में खो चुके एहसास कुछ पल के लिए उसे वापस मिल जाए कि वह फिर मरते रहने के लिए तैयार हो जाए।"[17]

'चोर निकल कर भागा' नाटक में बाजारीकरण का प्रभाव खूब दिखाई देता है, साथ ही साथ चोरी की प्रकृति को विभिन्न तरीके से दिखाया गया है। मृणाल पांडे ने इस नाटक के माध्यम से पत्रकारिता के जीवन को भी

दिखाया है कि पत्रकार होते हुए भी व्यक्ति राजनीति का पिछलग्गू बन जाता है। वह शासन तंत्र के खिलाफ नहीं लिखना चाहता। सामाजिक हितों को ध्यान में तो रखता है लेकिन राजनीति करने वाले लोगों के खिलाफत नहीं कर सकता। इसके अलावा उन्होंने यह भी दिखाया है कि पत्रकार होते हुए भी व्यक्ति किसी घटना को सच दिखाने के बजाय कभी-कभी गलत भी दिखा देता है। इस नाटक में ताज की चोरी की खबर जब कई प्रकार के समाचार पत्रों में फैल जाती है तब पत्रकार उसके पीछे की साजिश का जायजा नहीं लेते। वे केवल ताज के महत्व, ताज की विशेषता एवं उसके सौंदर्य का बखान करते हैं। चोरी में लिप्त भ्रष्ट लोगों का पर्दाफाश करने के बजाय उसे एक सामान्य चोरी समझ बैठते हैं। नाटक में यह उल्लेख मिलता है कि अखबार में इस घटना को किस अंदाज में छापा जाता है। यह उल्लेख इस प्रकार है-" अब प्यार के अनमोल प्रतीक ताज पर भी आतंक का शिकंजा ! गुमनाम गुट की धमकी। क्या दुनिया से प्रेम और सुंदरता मिट जाएगी? क्या भारत अपने महत्व का जगमगाता रतन, अपना ताजमहल, अपनी सबसे अनमोल कला, धरोहर। क्या हम देखते रहेंगे और देश की संस्कृति लूट जाएगी? भारतवासियों जागो ! 'वेक अप इंडिया'।"[18]

पत्रकारिता भी आज यथार्थ नहीं रह गई है। घटना कुछ होती है लिखा कुछ जाता है। इसके बावजूद उसमें राजनीति होने लगती है। कला और संस्कृति का प्रतीक ताजमहल की चोरी को सामान्य घटना समझ लिया जाता है। उसकी चोरी करने वालों पर तुरंत कार्यवाही नहीं होती बल्कि

उसके लिए पहले प्लान तैयार होता है। ताज के बारे में पत्रकारों की नियत क्या है? वह इस वक्तव्य से प्रस्तुत है जो इस प्रकार है-" राज का ताज और ताज का राज, जरूरत यह नहीं कि ताज को आज तस्करों के किस गिरोह से खतरा है इसका पता लगाया जाए। जरूरत इस बात की है कि पहले यह पता किया जाए कि इस गिरोह के पीछे सत्तारूढ़ दल के कौन-कौन से लोग हैं। हमारे यहां की पत्रकार चूकी होमवर्क नहीं करते, तरह-तरह की अटकलबाजियां लगाई जा रही हैं। मैं यद्यपि इस वक्त राजधानी में नहीं हूं, स्विट्जरलैंड में छुट्टी मना रहा हूं। इस वक्त भी अपनी भारतीय दोस्तों से ज्यादा जानकारी रखता हूं।"[19]

इसके अलावा इस नाटक में मास्टर गेंदालाल जैसे भ्रष्ट एवं मक्कार लोगों का चित्रण है जो बेरोजगारी में पिस रहे लोगों को अपना शिकार बनाते हैं, उनसे पैसे ऐठते हैं, उन्हें चोरी करवाते हैं। ऐसे लोग समाज में जब तक जिंदा रहेंगे तब तक वह दूसरों के ऊपर (उनके कंधे पर बंदूक रखकर) अपना निशाना लगाएंगे। कुल मिलाकर यह नाटक भ्रष्टाचार, मक्कारी, राजनीतिक प्रपंच, बेरोजगारी, पत्रकारिता के छल छद्म एवं स्त्री जीवन की विशेषता को दर्शाता है।

'शर्मा जी की मुक्ति कथा' नाटक मृणाल पांडे का पत्रकारिता जीवन पर आधारित नाटक है। पात्र अनंत नारायण शर्मा हिंदी में पत्रकारिता करता है। वह शासन तंत्र के खिलाफ बोलता है, वह चापलूसी नहीं करना चाहता। राजनीति की झूठी बकवास को समाचार पत्रों में नहीं लिखता इसी कारण

उसको जेल भेज दिया जाता है। आज के दौर में भी पत्रकारों के साथ यही होता है, जब वह शासन तंत्र की चापलूसी नहीं करते हैं, उसकी प्रशंसा नहीं करते बल्कि उनकी कमियों को लिखते हैं तब उन्हें हवालात में डाल दिया जाता है और उनके साथ बदसलूकी होती हैं। अवध नारायण शर्मा भी ईमानदारी का दामन पकड़ते हैं, वह जनता की समस्याओं एवं मुश्किलों को दिखाते हैं पर यह शासन तंत्र को मंजूर नहीं है। यह बात शर्मा की पत्नी और बेटी भी जानती हैं कि वे सच्चाई के साथ हैं परंतु शासन के चमचे झूठ बोलते हैं और कहते हैं कि उन्होंने अपराध किया है। समकालीन समाज में एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की यही दशा होती है। उसे फालतू समझा जाता है जब वह लोक कल्याण और मान्यता का पल्लू पकड़ता है तो शासन तंत्र द्वारा उसे भ्रष्ट बनने पर मजबूर कर दिया जाता है। अवध नारायण शर्मा ऐसे ही स्थितियों का शिकार हुए हैं। इस नाटक में संगीत का भी बीच-बीच में प्रयोग किया गया है। संवाद योजना सरल एवं स्पष्ट है। भाषा भी पात्रों के अनुकूल है जो नाटक को एक लक्ष्य की ओर ले जाती है। इसके अलावा मृणाल पांडे ने दो रेडियो नाटक लिखा। इनका मंचन भी आसानी से किया जा सकता है तथा रेडियो पर आसानी से सुना भी जा सकता है। भाषा का अनगढ़ प्रयोग नहीं बल्कि सामाजिक परिवेश के अनुसार बिल्कुल नपी-तुली भाषा है। हास परिहास की शैली में लिखे गए नाटक मानवीय संवेदना कि कई परतों को खोलते हैं, जैसे-जैसे नाटक आगे

बढ़ता है समस्याओं की तह में छुपी कई परतें उभरती चली जाती हैं तथा एक नई मनोवृत्ति की ओर इशारा करती हैं।

'सुपरमैन की वापसी' नाटक लोगों की समस्या पर आधारित नाटक है। सुपरमैन लोगों की समस्या को तुरंत हल करने का दावा रखता है। उसका कहना है कि वह जल्दी ही किसी के पास पहुंच सकता है। किसी स्त्री की समस्या हो या घरेलू समस्या हो तुरंत उसका निराकरण कर सकता है। इससे वह लोगों से पैसे वसूलता है। किसी का मकान खाली कराना हो वह उसके बाएं हाथ का काम है। ऐसी तमाम समस्याओं को लेकर यह नाटक लिखा गया है।

'धीरे धीरे रे मना' नामक नाटक गृहस्थ जीवन की समस्या एवं बेरोजगारी की ओर इशारा करता है। घर परिवार के रिश्तो की कड़वाहट को मार्मिक संवेदना के साथ इस नाटक में दिखाया गया है। उमा नामक स्त्री की समस्या यह है कि वह घर संभालती है, बच्चे संभालती है फिर भी परिवार में उसे एक मशीन समझा जाता है व्यक्ति नहीं। आज भी स्त्री घर परिवार में काम करते-करते पिस रही है। उसके इस दैनिक मजदूरी को मजदूरी नहीं समझा जाता बल्कि यह कहकर नकार दिया जाता है कि यह तो तुम्हें करना ही पड़ेगा। इसके अलावा इस नाटक में बुजुर्गों की भी समस्या को दिखाया गया है। उमा, रमेश परिवार से दूर मां बाप को छोड़कर शहर में रहते हैं। भाई सुरेश घर पर रहता है।वृद्धों की सेवा से उमा रमेश मतलब नहीं रखते। आज हमारे समाज में बुजुर्गों के साथ यही हस्र हो रहे

हैं। उन्हें फालतू और बुरा समझकर उनकी दया पर छोड़ दिया जाता है। वह अपनी परेशानियों का हल निकालने के लिए दर दर भटकते हैं। उन्हें वृद्ध आश्रमों में छोड़ दिया जाता है। रिश्तो से अलगाव की समस्या बढ़ती जा रही है। भूमंडलीकरण एवं उपभोक्तावाद की संस्कृति के चक्कर में मानव पिसता जा रहा है। बूढ़ों की इतनी दयनीय दशा हो गई है कि वे अंत में आत्महत्या करने को मजबूर हो जाते हैं।

निष्कर्षतः मृणाल पांडे के नाटक राजनीति, बेरोजगारी, स्त्री समस्या तथा मानवीय मूल्यों की ओर इशारा करते हैं। मृणाल पांडे जी ने नाट्य विधा के केंद्र में समस्याओं को रखा है। इस तरह का लक्ष्य भारतेंदु युग में भी था। नाट्य शिल्प एवं नाट्य प्रयोगों की कला कसौटी को रखते हुए लेखिका ने नाटककारों के भी राज खोले हैं। मृणाल पांडे के नाटकों की भाषा पात्रों की अनुभूति पर आधारित है। भाषा में उर्जा भी है, संवेग भी है, अकुलाहट, तड़प है, बेचैनी एवं तर्क भी है। एक स्त्री जब साहित्य का निर्माण करती है तब वह तर्कों के साथ अपना पक्ष रखती है, मृणाल पांडे ने यही पद्धति अपनाया है। भाषा कहीं-कहीं आक्रोश के साथ मनोविनोद की ओर बढ़ जाती है। नाटकीयता के साथ खींझ भी देखने को मिलती है। नाटक की भाषा केवल स्त्री जनित भाषा ही नहीं है बल्कि आम जनमानस की गर्जन तर्जन भी सुनाई देती है। कहीं-कहीं तो ऐसा लगता है कि इसमें चित्रमयता भी है।

निबंध एवं अन्य विधाएं -

मृणाल पांडे ने कई आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं। यह निबंध स्त्री विमर्श पढ़ने वालों एवं उससे संबंधित साहित्यकारों के लिए एक ऐसी संचित निधि है जो उनको इस क्षेत्र में ज्ञान का सागर प्रस्तुत करता है, चिंतन की नई दिशा का अवसर प्रदान करता है। उनके निबंध मानव के मन में जमी पुरानी रूढ़िग्रस्त दीवारों को ध्वस्त करते हैं। उसके स्थान पर नई चिंतनशील एवं चेतनायुक्त मकान का निर्माण करते हैं। पकी पकाई भाषा को छोड़कर तर्कयुक्त भाषा का द्वार खोलते हैं। यह निबंध ही नहीं है, विचारों के प्रवाह हैं। यह विचार जब मानव मन में उमड़ते हैं तो बड़ों बड़ों को पस्त कर देते हैं और जब साहित्य में भी बिखरते हैं तब स्त्री विषयक धारणाओं पर नया सवाल खड़ा करते हैं। इनके स्त्री विषयक लेख स्त्री की चेतना एवं संवेदना की टटोलते हैं। स्त्री के प्रेम और करुणा का जायजा प्रस्तुत करते हैं। घर के कामकाज से लेकर बाहर की दुनिया से उसके सुख-दुःख का खाका मृणाल पांडे सार्वजनिक तौर पर प्रस्तुत करती हैं। यदि निबन्धों को 'श्रृंखला की कड़ियां' के समतुल्य कहा जाए तो आश्चर्य नहीं है।

मृणाल पांडे का वैचारिक लेखन बहुत विस्तृत है। पाठक व साहित्यकार तो कभी-कभी बड़े संशय में पड़ जाता है कि आज तक इस ओर हमारा ध्यान क्यों नहीं गया? उनका वैचारिक लेखन चिंतन की नई दिशा की ओर इशारा करता है। केवल स्त्री लेखन की ओर ही नहीं सामाजिक रिश्तों,

जीवन की गतिविधियों, मानवीय मूल्यों का गठजोड़ उनके साहित्य में उभरता चला जाता है। स्त्री जीवन की एक-एक कड़ियां श्रृंखला की कड़ियां की तरह जुड़ती चली जाती हैं। मृणाल पांडे जी ने केवल चिंतन ही नहीं किया मानसिक टार्च को जरा तेज जलाकर उसमें मूल्यों और अस्मिता को खोजा है। रोशनी में एक एक कड़ी को जोड़कर शोध किया है। जैसे-जांच घर में वस्तुओं, व्यक्तियों के रोगों की जांच की जाती है वैसे ही नारी अस्मिता के मूल्यों में समस्याओं को जीवन की तराजू से तौला है। उसमें जो भी निकला है सब खरा-खरा ही निकला है, कुछ भी खोटा नहीं है। यही कारण है कि उनका नारी विमर्श स्त्री विमर्श पर लिखनेवालों, इसपर चर्चा करने वालों के लिए एक आधार बन जाता है। जैसे ही वे पिटी पिटाई पद्धति चलते हैं उनके कान खड़े हो जाते हैं। उनका मानना है कि यदि साहित्य चिंतन का विषय है तो स्त्री विमर्श भी चेतना और जागरण का विषय है। स्त्री विमर्श पर जब वे ताजगी के साथ लिखती हैं तब उनके मन मस्तिष्क में एक घरेलू और असहाय औरत होती है। महिला जीवन की त्रासदी को मृणाल पांडे जी ने भोगा है, खोजा है और जिया है। शायद कोई उनसे यह सवाल करें कि आपने नारी विमर्श की सच्चाई को इतना डटकर क्यों लिखा? अमूनन इसका उत्तर भी वह इसी लहजे में पाएगा कि-"स्त्री की मुक्ति यह कहने से नहीं होती कि स्त्री मुक्ति होनी चाहिए। जैसे गाना सीखना हो तो पूरी तन्मयता से गाकर ही सीखना पड़ता है वैसे ही मुक्ति का संघर्ष समझना हो तो उसमें डूबना ही पड़ता है।"[20]

'परिधि पर स्त्री' मृणाल पांडे के लेखों का संग्रह है। इसमें कुछ प्रमुख लेख हैं जैसे- मन ना रंगाए रंगाए जोगी कपड़ा, गरीबी का महिलाकरण, हजार बरस की असमानता क्यों?, छोटे पर्दे पर स्त्री आदि चर्चित चिंतन परक निबंध हैं। यह निबंध संग्रह स्त्री की परिधि की बारीकियों का आंकड़ा प्रस्तुत करता है। स्त्री के पास गरीबी है, लाचारी है और अकुलाहट है। इसका जिक्र बड़ी सावधानी से मृणाल पांडे ने किया है। मृणाल पांडे का नारीवाद स्त्री के जीवन के एक एक अंश को प्रस्तुत करता है। उनके यहां स्त्री वस्तु नहीं बल्कि मूल्य है। स्त्री जागरण की जो चेतना नवजागरण के समय चली थी वह मृणाल पांडे की साहित्य में आज भी देखी जा सकती है। इनके विचारात्मक लेख स्त्रियों को बल प्रदान करते हैं, चिंतन और समाधान का रास्ता दिखाते हैं। स्त्री आज किस परिधि में पहुंच गई है जहां वह मुक्त नहीं महसूस कर पा रही है। पाश्चात्य प्रभाव एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते वह और गुमराह होती जा रही है परंतु वहीं से संभलने का रास्ता भी निकाल लेती है। स्वार्थी पितृसत्तात्मक समाज ने भले ही स्त्री को विज्ञापनों एवं कैलेंडरों, पोस्टरों पर लाकर खड़ा कर दिया हो फिर भी स्त्री कमजोर नहीं है। वह अपने को हर क्षेत्र में ढाल देती है, वहीं से आगे निकलकर ऐसे समाज के लिए रास्ता भी बंद कर देती है। नारीवाद का राग अलापने वालों के लिए यह विषय गंभीर विषय है, यहां वे चुप भी हैं। मृणाल पांडे का नारीवाद स्त्री के जीवन स्तर को संघर्षों से जूझने की शक्ति देता है इसलिए मृणाल पांडे का कथन है कि-" दरअसल नारीवाद के

भीतर नारी के गुणों या गरिमा को लेकर खुद तुम्हारे भीतर जो भी आदर भाव हैं, वह उसके जीवन्त ही नहीं सुषुप्त सामर्थ्य की संभावनाओं से ही जुड़ा है। यह सच है कि नारी ही नहीं किसी भी दबे हुए वर्ग की पूरी सामर्थ्य एक साथ नहीं बल्कि क्रमशः ही जागती है और इस लम्बी प्रक्रिया के दौरान उस वर्ग के बीच कई तरह की कमजोरियां, व्यवहारगत दोष और सीमाएं प्रकट होते रहते हैं। उनको नकारा नहीं जा सकता लेकिन यह मान बैठना भी सांघातिक होगा कि वह वर्ग उन कमजोरियों और दोषों के अलावा कुछ नहीं। इसलिए बेहतर हो कि नारीवाद की प्रशंसा या आलोचना करते वक्त अपने लोग इन निहायत मानवीय त्रुटियों के परिमार्जन के लिए एक चौड़ी जगह हाशिए पर छोड़ दें।"[21]

'स्त्री लंबा सफर' मृणाल पांडे के लेखों का एक महत्वपूर्ण संग्रह है। इसमें भी छोटे-बड़े कुल 31 लेख हैं। इन लेखों में स्त्री के जीवन का लंबा सफर मिलता है। स्त्री जीवन की बागडोर किन किन लोगों के हाथों में होती है? घर परिवार, माता-पिता, भाई, समाज सब के प्रश्नों से होकर स्त्री को गुजरना पड़ता है। स्त्रियों के जीवन में संघर्ष तो है ही साथ ही साथ जीवन जीने का लंबा सफर अत्यंत कठिन है। घर के कामकाज से लेकर बाहर तक के सफर में पुरुष कितना भागीदार है यह तो वही जानती है। पिछले कुछ दशकों से स्त्री चेतना में जो सुधार आया है उससे सफर थोड़ा आसान हुआ है लेकिन समस्याएं और मुद्दे अभी भी खत्म नहीं हुए हैं। राजनीति में, संसद में, सभाओं में अफवाहें फैलाई जाती हैं कि स्त्रियों को अधिकार मिल

रहे हैं, स्वतंत्रता मिल रही है, हर जगह जाने,खाने, रहने की छूट है परंतु अधिकार देने के बजाय राजनीतिकरण ज्यादा हो रहा है। आज संसद और कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में महिलाओं की तादाद जरूर बड़ी है लेकिन मुख्य वक्त पर उन्हें किनारे ही कर दिया जाता है। काम करने वाली स्त्रियों को उनको पुरुष मजदूरों की अपेक्षा कम पैसे मिल रहे हैं। स्त्री इस सफर को कब तक तय करेगी? मृणाल पांडे सर्वप्रथम घर परिवार की औरतों का जिक्र करतीं हैं जिसमें एक स्तर वह है-जहां अबला स्त्रियां हैं, दूसरा स्तर वह है- जहां परिवार के कमासुत मां होने के कारण बांझ औरतें या पुत्रहीन स्त्रियों की तादाद देखने को मिलती है। स्त्रियों के लिए कानून तो बन रहे हैं लेकिन उनका पालन जमीनी स्तर पर नहीं बल्कि औपचारिक स्तर पर हो रहा है। कामकाजी औरतें, अबला, पारिवारिक स्त्रियां, नौकरी पेशा तथा चहारदीवारी में घुट रही औरतों का हाल समान है। थोड़ा नौकरी पेशा की औरतें सजग और बौद्धिक हैं इसलिए जुल्म कम होते हैं। मृणाल पांडे मीडियास्तर पर इन मुद्दों की गहरी छानबीन करती हैं। वह ऐसे मुद्दों को सार्वजनिक करना चाहती हैं ताकि कानून की दुहाई देने वाले या राग अलापने वाले लोग यह समझ ले कि स्त्री स्त्रियां कितना सुरक्षित है? स्त्री अभी अपने सफर को तय कर रही, अभी रास्ता लंबा है। सरकार की राजनीति पर मृणाल पांडे खुलकर कहती हैं की- "कानून यह भी स्वीकार करता है कि भारतीय समाज में दकियानूसी परंपराओं के चलते कई बार पत्नियां ही नहीं अनव्याही बहने, बेटियां और कई नन्ही बच्चियां भी घरों के भीतर गहरे जुल्म की शिकार

होती हैं। स्त्री के खिलाफ पुरुष द्वारा घर के भीतर किए गए जुल्म को कानून दंडनीय बनाता है।"[22]

स्त्री बड़ी सूझबूझ से काम लेती है वह अपना पक्ष रखती है। विचारों को समझती है, इतना ही नहीं विश्वास के लिए अपना तर्क भी प्रस्तुत करती है। वह अपनी सामर्थ्य एवं प्रतिभा के बल पर अपनी समस्याओं को स्वयं हल करती है। स्त्री के अधिकारों एवं मनोदशा का चित्रण करते हुए महादेवी वर्मा श्रृंखला की कड़ियां में कहती हैं कि-" जहां तक सामाजिक प्राणी का संबंध है स्त्री उतनी ही अधिक अधिकार संपन्न है, जितना पुरुष, चाहे वह अपने अधिकारों का उपयोग करे या न करे। समाज न उनके उपयोग का मूल्य घटा सकता है और न बढ़ा सकता है, केवल वह बंधनों से उसकी शक्ति और बुद्धि को बांधकर जड़ बना सकता है, परंतु उन बंधनों में कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जो केवल उसके लिए ही नहीं, वरन सबके लिए घातक सिद्ध होंगे।"[23]

'जहां औरतें गढ़ी जाती हैं' मृणाल पांडे की यह चर्चित पुस्तक है जिसमें कुल 25 निबंधात्मक लेख है लेख क्या है? पूरा का पूरा एक विचारों का पुलिंदा है जिसको पढ़कर स्त्री के समस्त भागीदारी को समझा जा सकता है। शिक्षा, बॉलीवुड, परिवार, मीडिया, विश्वविद्यालय सभी जगहों पर अपने तरीके से आगे बढ़ रही है तथा उसका कितना शोषण हो रहा है? इसका उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है तथा इन सबके मूल में नारीवाद की

अवधारणा छिपी हुई है। इस पुस्तक में लिखे गए लेख अक्सर राजनीति, महिला सशक्तिकरण, नारी अस्मिता, नारी समस्या, पत्रकारिता, पंचायती राज आदि सभी क्षेत्रों के लिए सहायक सिद्ध हुए हैं। एक पत्रकार होने के नाते मृणाल पांडे ने इस पुस्तक में नारी विरोधी रवैयों को उजागर किया है। स्त्री की अस्मिता से खिलवाड़ करने वालों को फटकारा भी है। स्त्री इस समाज में एक रोजगार और सम्मान के लिए क्यों भटक रही है? एक बड़ा सवाल उठाया है। उनके छोटे-छोटे लेखों में स्त्री जीवन के किस्से भरे पड़े हैं। उसमें तनाव और छटपटाहट भी है। मृणाल पांडे ने छटपटाहट को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है। एक साहित्यकार एवं पत्रकार होने के नाते घटनाओं को बड़ी आसानी से प्रस्तुत करती हैं। वे अपने पात्रों को घटनाओं एवं मूल्यों के साथ प्रस्तुत करती हैं। लेखिका की दृष्टि से वे उनके जीवन के मर्म को पहचानती भी हैं तथा जीवन की अनुभूतियों को संवेदना के स्तर पर प्रस्तुत भी करती हैं। नारी जीवन की समस्त दृष्टिकोण का मूल्यांकन करती हुई वे कहतीं हैं कि-"आज का बेहतर महिला लेखन पुरुषार्थवादी पिटी पिटाई समीक्षा का निरीह अनुगामी नहीं रहा। वह हर नए एवं परती जमीन तोड़ने वाले लेखन जैसा आक्रामक और सतर्क है। लिहाजा उसको पढ़ने के मामले में पाठक समीक्षक को भी सतर्क बनना होगा।"[24]

'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' पुस्तक में संगीत की साधना का यशोगान किया है। संगीत की दुनिया में कुछ समय तक मग्न होने के कारण उन्होंने संगीत की बारीकियों को बड़े नजदीक से समझा। उनकी शर्तों को स्वीकार

भी किया तथा इस क्षेत्र में काम करने वाली स्त्रियों का खाका भी खोज निकाला। संगीत की दुनिया का जिक्र करते हुए वे कहती है की-"जीवन भर शोर शराबे और दूसरों की शर्तों सेवा में जीवन जी चुकी औसत महिला को एकांत और शांति चैन नहीं देती, डराती है। एकांत मिल भी जाए तो क्या? का बरखा जब कृषि सुखानी। उसकी अपनी कुंठा और कुढ़न उसके भीतर अक्सर उन संगीतकार महिलाओं को लेकर प्रतिहिंसा और ईर्ष्या से भर देती है, जो घर परिवार के मध्यवर्गीय आग्रहों को लांघकर संगीत साधना की ज्योति जलाए रहीं।"[25]

'ओ उब्बीरी' (भारतीय स्त्री का प्रजनन और यौन जीवन)- यह पुस्तक एक स्त्री के स्वास्थ्य एवं यौन जीवन की कहानी है। कुल 9 अध्यायों में विभक्त यह पुस्तक कई राज्यों की स्त्रियों का शोधपरक जायजा प्रस्तुत करती है। उनका रहना, खाना-पीना, जीवन रुदन, सबका निचोड़ इसमें उपस्थित है। वह रोती है तो मुंह पर पल्लू रखकर, उसका रोना सुनता ही कौन है? अस्पतालों में उनके लिए चिकित्सक नहीं है। एक गरीब महिला जब उपचारों के लिए स्वास्थ्य केंद्र पर जाती है तब उसे यह कहकर भगा दिया जाता है कि आज डॉक्टर नहीं आया है, आज अवकाश पर है। यदि इस दशा में स्त्री को गंभीर रोग हो या प्रजनन की समस्या हो तो उसको कहां आधार मिलेगा? ऐसी विडम्बनाओं का जिक्र इस पुस्तक में मिलता है। मृणाल पांडे का रिपोर्ट परक लेखन कई बार स्त्री विरोधियों के मुंह भी बंद कर देता है। स्त्री विमर्श का विरोध करने वाले मनु रोगियों के लिए

सबक भी देता है। प्रस्तुत अंश में लेखिका ने स्त्री जीवन की सच्चाईयों को एक झटके में समेट लिया है जिसको पढ़ने के बाद यही पता चलता है कि भारत देश में स्त्रियों के कैसे-कैसे हस्र होते हैं? महाराष्ट्र की महिला मीणा के जीवन का विवरण समकालीन समाज की एवं योजनाओं की पोल खोल देता है। बुखार में तप रही स्त्री को जीवन जीने की आकांक्षा तो है लेकिन मुमकिन नहीं लग रहा। मृणाल पांडे के सर्वे के अनुसार यह बात देखने को मिलती है कि स्त्री की आज क्या दशा है? उनके पुस्तक में एक विवरण इस प्रकार मिलता है-"जब हमने उसे देखा तो सर से पांव तक उसका शरीर लाल लाल चकतों से ढका था। हमारी समझ में तब कुछ न आया। बाद में हमने जाना की यह निशान मच्छरों के काटे के हैं। उसमें इतनी सी ताकत नहीं थी कि वह मच्छरों को अपने तन से भगा सकती। इतनी असहाय दशा में पहुंचकर मीना को स्वयं से और पूरी दुनिया से घृणा हो गई थी। अपने आसपास की सारी चीजों, सब लोगों के प्रति घृणा जाहिर भी करती रहती थी। हमने उसके गले से दवा की एक टीकिया उतारनी चाही तो उसने गुस्से में इसे हमारे ऊपर थूक दिया और चिल्ला कर बोली, 'मुझे अकेला छोड़ दो'। हमने उसके बिस्तर के बगल में बैठकर उसके मुंह से निकलती गालियों को अनसुनी करके उससे प्यार से बोलना शुरू किया। पहले वह खूब चीखी चिल्लाई, पर धीमे धीमे हमारी उपस्थिति को लेकर उसकी बेचैनी जाती रही। उसने हमें अपने को छूने की छूट दी और बिछौने तथा अपने शरीर को साफ करना कराना भी मंजूर कर लिया। धीरे-धीरे उसकी कठोरता

और पैनेपन भेदकर एक कमजोर, असहाय और शिशुवत अबोध मीना प्रकट होने लगी, जो अब तक कहीं नहीं दिखाई देती थी। जब उसने हमें अपने जीवन और जीवन शैली के बारे में गहराई से बताना शुरू किया।जो अनुभव लोगों के हृदय को कठोर बनाकर हमसे दूर कर देते हैं- उन अनुभवों से गुजरने के बावजूद मीना के अंदर मानवीयता की धारा विद्यमान थी। उसके बातों से यह साफ झलक रहा था की मीना ने हमें अपने हृदय में बैठने दिया।"[26]

'स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक' नामक पुस्तक एक स्त्रीत्व का मानचित्र उपस्थित करती है। प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने नारी जीवन की कड़ियों को बड़ी आसानी से जोड़ा है तथा उनकी मुक्ति व अधिकारों को बखूबी परखा है। नारी का जीवन सहज सरल एवं सौंदर्य से युक्त है इस बात की पुष्टि लेखिका ने सारगर्भित टिप्पणियों के माध्यम से किया है। कई राज्यों एवं गांव की स्त्रियों का विश्लेषण करने के बाद मृणाल जी ने स्त्री के अस्तित्व को अपने लेखों के माध्यम से व्यक्त किया है। स्त्री आत्मनिर्भर होकर भी आज समाज में संघर्षों से जूझ रही है। वह केवल अपना स्थान बनाने के लिए तत्पर है। अधिकार एवं कर्तव्य तो बाद की चीजें हैं। बड़े लेखकों एवं विद्वानों के द्वारा नारी का महिमामंडन करना अलग बात है परंतु उनकी संवेदना तथा जीवन की कठिनाइयों को समझना बड़ा मुश्किल काम है। पराई पीर का आकलन शायद ही कोई कर पाता है। अपनी पारिवारिक रिश्तों में सामंजस्य रखती हुई स्त्री घर से बाहर तक

सभी सवालों से गुजरती है फिर भी लोगों में यह धारणा व्याप्त है कि स्त्री का समाज में कोई योगदान नहीं। स्त्री के मूल्य और परोपकार को शायद ही कोई समझे। पितृसत्तात्मक घटिया सोच को दरकिनार करते हुए लेखिका ने स्त्री की वास्तविक महत्व को उजागर किया है। स्त्री के पास प्रेम है, समर्पण है, श्रद्धा है, सबकुछ है, पर पुरुष इन् सबसे अधूरा है। स्त्री जीवन की मनोवृत्तियों का आकलन करते हुए मृणाल पांडे कहती हैं कि-" यह एक भ्रांति है कि आत्मनिर्भर स्त्री के मन में घर परिवार के लिए प्यार या चिंता नहीं, ठोस उदाहरण यदि हम देखें तो पाएंगे कि स्त्री का संघर्ष, धैर्य और प्रेम की क्षमता अन्त तक उसे टूटते हुए को बचाए रखने की प्रेरित करतें हैं। अपने यहां घर और रिश्ते जब टूटते हैं तो वे वर्षों से चले आ रहे अन्याय के बोझ से टूटते हैं। स्त्री के विकसित मुक्ति भावना से नहीं।"[27]

संपादन:-

मृणाल पांडे ने कुछ ग्रंथों का संपादन भी किया है जैसे-

(1) बंदगलियों के विरुद्ध:- इस रचना का प्रकाशन 2001 में हुआ है। मृणाल पांडे जी ने बंद गलियों के विरुद्ध साहित्य में पत्र-पत्रिकाओं का संकलन किया है। क्षमा शर्मा और मृणाल पांडे ने इंडियन निवेश प्रेस कोर के जरिए कई लेखिकाओं के लेखों को संपादित किया है। इन आलोचनात्मक लेखों में लेखिका का एकमात्र लेख है जिस का विषय है-नर्क राहें मांगती हैं नए मुहावरे'। मृणाल पांडे ने 'बंद गलियों के विरुद्ध' पुस्तक में अलग-अलग

विषयों को लेकर कई आलेख संकलित किए हैं। जिसमें स्त्रियों की समस्याएं, जीवन की दुरूहता, मानवीय मूल्य तथा वैचारिकता का नया स्तर प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने यह भी दिखाने का प्रयास किया है कि एक भारतीय स्त्री लेखिका होते हुए क्या लिखती है? लेखिकाओं के कथानक कैसे कैसे होते हैं? किसी विषय की समीक्षा करते हैं तो किन-किन विषयों को चुनती हैं। समीक्षाओं में क्या-क्या समाहित होते हैं, कौन-कौन से मुद्दे ज्यादा जरूरी होते हैं? उनका मानना है कि आप स्त्री लेखिका हैं तो आप नारीवाद के पक्ष और विपक्ष दोनों में लिख सकती हैं परंतु मुद्दे एवं कथानक नए होने चाहिए। लेखन में आपके पास सामग्री होनी चाहिए। रटी-रटाई एवं बनी-बनाई सामग्री नहीं होनी चाहिए। आपके लेखन क्षमता साहित्य और समाज को एक नई ऊर्जा दें, तभी आप मानव जीवन का मूल्यांकन कर सकते हैं। लेखको को समीक्षित होना अनिवार्य है तथा उनकी समीक्षा भी नए मुहावरों से होनी चाहिए।

(2) बोलता लिहाफ- इसका प्रकाशन 2007 में हुआ था। मृणाल पांडे और विष्णु नागर के संपादन में यह पुस्तक निकली। पत्रकार के रूप में प्रसिद्ध मृणाल पांडे एक अच्छी संपादक भी रही हैं। इस संग्रह में हिंदी के महत्वपूर्ण लेखकों के द्वारा लोकप्रिय मासिक कादंबिनी के कथा प्रतिमान स्तंभ के लिए चयनित विश्व साहित्य की श्रेष्ठ कहानियां संकलित हैं। चयनकर्ता कथाकारों ने इसमें अपनी पसंद के कारणों का जिक्र करते हुए इन कहानियों की विशेषताओं का वर्णन किया है।

अनुवादः- मृणाल पांडे हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखती हैं। उनके कुछ पुस्तकों का दूसरे लेखकों द्वारा अनुवाद भी हुआ है। उनके अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद कई अनुवादकों ने हिंदी में किया है। वे इस प्रकार हैं-

(क) देवी, उपन्यास (अनुवादक मधु जी जोशी 1999)

(ख) हमका दियो परदेश, उपन्यास (अनुवाद मधु बी जोशी 2001)

(ग) अपनी गवाही, उपन्यास (अनुवाद अरविंद मोहन 2003)

अंग्रेजी में रचित साहित्य-

समकालीन रचनाकारों की तरह मृणाल पांडे विभिन्न विषयों पर लिखने वाली एक सशक्त महिला लेखिका हैं। उनका रचना संसार स्त्री जीवन के मूल्यों की बारीकी से तलाश करता है, उन्हें भटका ता नहीं बल्कि खोजता है। शोध के द्वारा खोजा गया साहित्य स्त्री जीवन को प्रेरित करता है। संपूर्ण साहित्य ही स्त्री केंद्रित है। अंग्रेजी में लिखित पुस्तकें इस प्रकार हैं-

(क) द सब्जेक्ट इन वूमन (महिला विषयक लेखों का संकलन)

(ख) द डॉटर्स डॉटर, माई ओन विटनेस (उपन्यास)

(ग) देवी उपन्यास (रिपोर्ताज)

(घ) स्टेपिंग आउट - लाइफ एंड सेक्सुअलिटी इन रूरल इंडिया।

इस प्रकार मृणाल पांडे का रचना संसार स्त्री की मुक्ति एवं अधिकारों का व्यापक स्तर पर अध्ययन प्रस्तुत करता है। ये रचनाएं भी मनोवैज्ञानिक

दृष्टि से नारी के ऊपर हो रहे अत्याचारों, शोषण एवं अन्याय को व्यक्त करती हैं। इनमें उनके जन्मों की कहानी है, कई जन्मों की रिश्ते मिलते-जुलते,घुलते,एवं दहकते दर्द चुके हैं। इन दर्दों से कराहती नारी अपने जीवन की अकुलाहटो को कैसे-कैसे कहती है? दर्द की परिधि में स्थित नारी अपने अस्तित्व रूपी पर को फैलाए निरंतर संघर्षरत है। उसके पास अधिकार भले ही नहीं हैं लेकिन अपनी शक्ति है, अपनी क्षमता है और जीवन का दर्द है। इन दर्द को वह गाने की वजह है रोती है। उसका रुदन केवल स्त्रियों की ही नहीं संपूर्ण युगों के समाज को जीवन जीने को प्रेरित करता है। गीतों, लोकगीतों में रोती, कहती स्त्री, स्त्री विमर्श की आधी अधूरी कड़ी को जोड़ती है जहां वह खत्म होने के कगार पर है। उसकी क्षमता का आकलन पुरुष आज भी नहीं कर रहा है, बस उसे काम देता है पर काम की कीमत नहीं देता। दूसरी तरफ उसे अबला की उपाधि दिए हुए हैं। स्त्री अबला नहीं सबला के पथ पर चलायमान है। अभी यह सफर उसे लंबा तय करना है मगर वह रुकेगी नहीं। स्त्री विमर्श इन्हीं मुद्दों को आज भी तलाश कर रहा है।

अन्य रचना-

1. हीमुली हीरामणि की कथा(दिल्ली निराला हाउस से प्रकाशित सितंबर 29 2017)
2. जानकीपुल (आज का पंचतंत्र या हितोपदेश।)

पद या उपाधि-

(1) मृणाल पांडे प्रसार भारती की पूर्व अध्यक्ष रह चुकी हैं। उन्होंने इस पद को 2010 से 2014 तक संभाला था।

(2) द एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड की वरिष्ठ संपादक सलाहकार रह चुकी हैं।

(3) वूमन संस्था की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

पुरस्कार या सम्मान-

(क) पद्य श्री (2006)
(ख) रेड इंक पुरस्कार
(ग) हिंदी अकादमी पुरस्कार उत्तर प्रदेश
(घ) ओम प्रकाश साहित्य सम्मान
(च) हरिदत्त शर्मा जयंती पुरस्कार
(छ) राष्ट्रीय दुष्यंत कुमार अलंकरण सम्मान(2014), जो 17 मार्च 2015 को मिला।
(ज) महाराणा प्रताप मेवाड़ फाउंडेशन सम्मान।

(5) भारत में स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पाण्डे का स्थान:-

स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पांडे का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने नारी जीवन की त्रासदी को परखा है। स्त्री अपने मन, वचन और कर्म से समाज के संपूर्ण क्षेत्रों में समर्पित है। वह जीवन की अभिलाषा को मन में ही नहीं संजोए रखती बल्कि अपनी आकांक्षा को घर, परिवार, समाज सबके सामने रखती है तथा समस्याओं को सुलझाने की ताकत रखती है। इधर

कुछ दशकों से स्त्री के जीवन में जो परिवर्तन हुए हैं, उसके अधिकारों एवं मूल्यों में वृद्धि हुई है तब से वह और ताकतवर हुई है। सामाजिक शोषण और अन्याय के विरुद्ध लड़ते लड़ते वह आज स्त्री विमर्श के केंद्र में है। मुद्दों को सामने रखने के कारण सब की दृष्टि में बनी हुई है यह भी पता चल चुका है कि वह भी अपने कर्तव्यों के प्रति जागृत हुई है। मृणाल पांडे ने नारी जीवन के विविध मुद्दों को अपने उपन्यास नाटक, कहानी तथा निबंधों में संजोया है। निबंधों में संचित लेख तो बिल्कुल समझिए स्त्री जीवन का हलफनामा है। चर्चित नारीवाद के मुद्दों पर लिखने वाली मृणाल पांडे इस पर सवाल उठाने के लिए कोई जगह नहीं छोड़ती। साहित्यकारों की पुरानी परिपाटी में कम विश्वास करती हैं बल्कि स्वयं के अनुभव, देखी गयी घटनाओं के माध्यम से नारी विमर्श का मूल्यांकन करती हैं। कथा साहित्य तथा अन्य विधाओं में निम्न विषयों को एक दम सरल तरीके से समेट लिया है जो वस्तुतः नारी जीवन की समस्याएं भी हैं। जो इस प्रकार है-:

(क) हिंसा तथा शोषण से त्रस्त स्त्री - एक सामान्य स्त्री जो मां, बेटी, बहु तथा दादी भी है। वह बाहर तो है ही घर में भी हिंसा और शोषण का शिकार है। मर्यादा में रहकर स्वंय की रक्षा करती है। सबके अनुसार चलती है परंतु घर में ही मारी, सताई, जलाई जाती है। उसके साथ पशुवत व्यवहार होते हैं। इसी पशुवत कार्य से वह मुक्ति चाहती है। नारी विमर्श इसी से स्त्री को मुक्ति दिलाना चाहता है। इसी कारण से व्यक्ति कटघरे में है।

छेड़खानी और बलात्कार से पीड़ित स्त्रियां मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक दोनों स्तर पर कमजोर हो जाती हैं मगर यह करता कौन है? इसी समाज में रहने वाला पुरुष है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में रहकर स्त्री विमर्शकारों का रोना रोने वाले शायद ही ऐसे मुद्दों को समझ पाए एवं हल कर पाए। हिंसा और शोषण की शिकार हर वर्ग की स्त्रियां हैं, खासकर कम पढ़ी-लिखी ग्रामीण स्त्रियां और दलित स्त्रियां जिनको अपने कर्तव्य एवं अधिकार शून्य के बराबर पता है उनके साथ तो न जाने कैसे सलूक होते हैं। स्त्री की स्थिति का जायजा मृणाल पांडे ने इंटरव्यू के माध्यम से भी लिया है।

स्त्री का जीवन एक सामान्य व्यक्ति के जीवन से ज्यादा त्रासद एवं दुखद है। उसका दुख एवं संवेदना सबके लिए सरल होता है परंतु इस स्त्रीत्व के कटघरे में खड़ी स्त्री ऐसे दावों को सीधे इंकार कर देती है। वह अपने मूल्यांकन का उत्तरदायित्व स्वयं लेती है। दूसरे के द्वारा किए गए मूल्यांकन को वह सच नहीं मानती है। आज स्त्री लेखन के क्षेत्र में तमाम लेखक लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गई है पर हकीकत की तराजू पर बहुत कम ही पैर रखने वाले चंद लोग हैं। समीक्षाएं भी झटके में की जा रही हैं। बस सब 'मुहं देखी बातें हैं'। स्त्री का अपना संसार है, उसकी अपनी उड़ान है। वह चांद तारों के प्रश्न और पुरुष द्वारा चांद पर ले जाने की बात को (ऐसे झूठ को)आसानी से समझ लेती है। वह आत्मनिर्भर एवं आत्मसम्मान से रहना और जीना चाहती है। स्वयं नौकरी करके, बिजनेस करके दुकान चलाकर सबका भरण-पोषण करना चाहती है। कमजोर समझी जाने वाली

स्त्री को अब कमजोर न समझा जाए बल्कि उसके प्रति सहानुभूति परक रवैया अपनाया जाए। स्त्री की हालत पर बयान देते हुए मार्क्स का कहना था कि-"अगर किसी समाज में पर्यावरण एवं परिस्थिति की हालत को समझना है तो उस समाज में औरत की स्थिति देख लेनी चाहिए।"[28]

(ख) अविवाहित स्त्रियों का चित्रण- साहित्य में मृणाल पांडे का स्थान इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि उन्होंने अविवाहित स्त्रियों एवं कन्या भ्रूण हत्या की समस्या को अपनी लेखन की केंद्र में रखा। तमाम ऐसे मुद्दे हैं जिन पर लोग खुलकर बातें नहीं करना चाहते। विवाहित स्त्रियों की समस्या तो समाज को स्वीकार ही नहीं है। समाज उन पर भले ही अंगुली उठाने लगता है। उसकी तमाम गलतियां निकाल कर समस्याओं का निदान करने के बजाय उन्हें कुंठित कर देता है यही कारण है कि स्त्रियां ऐसे शोषण का शिकार होकर वेश्या और और तवायफ तक बन जाती हैं और उसी को ही अपना जीवन समझ लेती हैं, उसी में व्यस्त हो कर अपना पूरा जीवन खपा लेती हैं जबकि इसका जिम्मेदार यह समाज है जिसने उसे ऐसा करने पर मजबूर किया। अपने आप जीवन जीने वाली स्त्री यदि दूसरे का गुलाम बन जाए तो यह व्यवस्था ज्यादा फायदा उठाने लगती है। ज्यादा मात्रा में औरतों का तवायफ होना पितृसत्तात्मक समाज पर प्रश्नचिन्ह भी खड़ा करता है। एक कहावत का जिक्र करना यहाँ उचित प्रतीत हो रहा कि 'औरत बिकी तो तवायफ हो गई और पुरुष बिका तो दूल्हा हो गया'। बड़े स्तर पर स्त्रियों की खरीद, बिक्री आज के समय में भी की जा रही है, यह भी स्त्री अस्मिता विमर्श

के प्रति चिंतन का विषय है। खत्म होती स्त्री की अस्मिता, उसकी मूल्य हीनता नारी को खतरे के बाहर नहीं जाने देती। कन्या भ्रूण हत्या आज आम बात हो गई है। बालक बालिका का भेद थमने का नाम नहीं ले रहा है। हर परिवार को लड़की के बजाय लड़का जरूर चाहिए। यदि ऐसे ही समाज में यह कोढ़ व्याप्त हो गया तो मानवता का आकलन करना मुश्किल हो जाएगा। यही बात आगे चलकर स्त्री-पुरुष का भेद पैदा करता है। स्त्री-पुरुष मुख्यतः समतुल्य हैं पर सामाजिक दृष्टि से इनमें अंतर आया है। स्त्री विमर्श इसी अंतर को कम करने की बात करता है।

मृणाल पाण्डे ऐसे मुद्दों पर सरलता पूर्वक बात करती हैं और मानती हैं कि दोनों समाज के अंग हैं, दोनों में अंतर नहीं होना चाहिए। स्त्री अपनी वैचारिकता में पुरुष से आगे हैं। वह अपनी मानवीय मूल्यों का समर्थन करती है जबकि पुरुष केवल अपने हित की बात करता है। अपने अधिकारों को अधिक तथा स्त्री को कमतर बताता है। स्त्री की बुद्धि को घुटने में मानता है, सदैव उसे शारीरिक रूप से कमजोर मानता ही है, बौद्धिक स्तर पर कम आंकता है। इस बात का जिक्र करती हुई आशारानी बोहरा कहती हैं कि-" हमारे यहां नारी मुक्ति संघर्ष पश्चिम के नारी मुक्ति आंदोलन से एकदम भिन्न है।वहाँ स्त्रियों ने लगभग एक सदी की लम्बी अवधि तक अपनी मुक्ति की लड़ाई पुरुषों से मुक्ति के रूप में, उनके विरुद्ध खड़ी होकर, अपमान झेलकर लड़ी।भारत में यह लड़ाई विदेशी दासता व प्राचीन रूढ़ियों

के विरुद्ध एक साथ लड़ी गयी, जिसमें स्त्री-पुरूष प्रतिद्वंद्वी नही सहयोगी थे। पुरूष इसमे पहले कर्ता व प्रेरक रहे।"[29]

इस प्रकार मृणाल पांडे का साहित्य स्त्री विमर्श के विभिन्न पक्षों की जांच करता है। वैचारिक स्तर पर स्त्री विमर्श का मूल्यांकन भी करता है। स्त्री के प्रति सहानुभूति, उदार रवैया अपनाता है। सदियों से त्रस्त स्त्री को एक मार्ग देना चाहता है। मृणाल पांडे जी का लेखन चारदीवारी में बंद औरत के भाग्य के दरवाजे को खोलने का प्रयास किया है तथा मृणाल जी स्त्री को मजबूती देना चाहती हैं, आधार देना चाहती हैं ताकि वह सही जगह पर टिक सके। मृणाल पांडे का नारीवादी लेखन स्त्री के जीवन के लिए एक रास्ता तैयार करता है जो उनके साहित्य को पढ़ने के बाद मालूम होता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

(1) Web dunia, समाचार पत्र, (गुरुवार 2 अक्टूबर 2014)

(2) पाण्डे मृणाल- यानी कि एक बात थी (कहानी संग्रह), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या

(3) पाण्डे मृणाल- विरुद्ध (उपन्यास), (2013), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 8

(4) पाण्डे मृणाल- पटरंगपुर पुराण (उपन्यास), (2010) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 9

(5) पाण्डे मृणाल- पटरंगपुर पुराण (उपन्यास), (2010) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 22

(6) पाण्डे मृणाल- रास्तों पर भटकते हुए (उपन्यास) (2010), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 126

(7) पाण्डे मृणाल- अपनी गवाही (उपन्यास), (2010), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 22

(8) पाण्डे मृणाल- सहेला रे (उपन्यास), (2017), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 152

(9) पाण्डे मृणाल- बचुली चौकदारिन की कढ़ी (कहानी संग्रह), (2002) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या कवर पेज से।

(10) पाण्डे मृणाल-चार दिन की जवानी तेरी (कहानी संग्रह), (1995) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 19

(11) पाण्डे मृणाल-यानी कि एक बात थी (कहानी संग्रह), (1990) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या, प्रस्तावना से।

(12) चातक गोविन्द-नाटक की साहित्यिक संरचना, पृष्ठ 5

(13) पाण्डे मृणाल-सम्पूर्ण नाटक (जो राम रचि राखा), (2011), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 67

(14) पाण्डे मृणाल-सम्पूर्ण नाटक (आदमी जो मछुआरा नही था), (2011), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 102

(15) पाण्डे मृणाल-सम्पूर्ण नाटक (आदमी जो मछुआरा नही था), (2011), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 108

(16) पाण्डे मृणाल- सम्पूर्ण नाटक (काजर की कोठरी), (2011), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 155

(17) खंडेलवाल दीप्ति-दो पल की छाँव (कहानी), पृष्ठ 9

(18) पाण्डे मृणाल-सम्पूर्ण नाटक (चोर निकल के भागा), (2011) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 256

(19) पाण्डे मृणाल-सम्पूर्ण नाटक (चोर निकल के भागा), (2011) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 257

(20) पाण्डे मृणाल-स्त्री लम्बा सफर (2012), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 6

(21) पाण्डे मृणाल-परिधि पर स्त्री, (1996), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 11-12

(22) पाण्डे मृणाल-स्त्री लम्बा सफर (2012), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 97

(23) वर्मा महादेवी-श्रृंखला की कड़ियाँ (2012), लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 93

(24) पाण्डे मृणाल-जहां औरतें गढ़ी जाती हैं, (2006) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 3

(25) पाण्डे मृणाल-ध्वनियों के आलोक में स्त्री, (2015), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 8

(26) पाण्डे मृणाल-ओ उब्बीरी, (2005), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 100

(27) पाण्डे मृणाल- स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, (1987), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 20

(28) दुबे, कुमार अभय-मार्क्सवाद एवं नारी मुक्ति लेख, (हंस पत्रिका), जनवरी फरवरी (2000), पृष्ठ संख्या 154

(29) बोहरा आशारानी-भारतीय नारी दशा एवं दिशा, पृष्ठ संख्या 18